CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2025 with Solution PDF-Set 2/1/3

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. प्रकृति के कई रंग हैं और उन रंगों में कोई होड़ नहीं है। रंगों की इस विशाल दुनिया में हम भी तो एक रंग ही हैं। पर हमारे साथ दिक्कत है। एक तो हमें अपने रंगों का पता नहीं है। दूसरा, हम दूसरों के रंगों से डरते हैं। हम भूल जाते हैं कि जीवन बहुरंगी है। दूसरे के जैसा होने की या उन्हें अपने जैसा करने की हमारी कोशिशों का कोई बहुत अर्थ भी नहीं है। कारण जबर्दस्ती चढ़ाए गए रंग देर तक टिकते ही नहीं है। सबको एक ही रंग में रंगने की कोशिश से बेहतर है कि हम एक-दूसरे को अपना सहयोग दें। दो रंग जुड़ते हैं तो एक नया ही रंग बन जाता है। इसी तरह आपस के साथ से हम भी कुछ नए रंग जिंदगी में जोड़ सकते हैं।

सुख सतरंगी है तो दुख के भी कई रंग हैं। फिर, सफेद और काले रंग के भी कई प्रतिरूप होते हैं। गायिका एमी ग्रांट कहती हैं, 'काले रंग के बिना किसी भी रंग को गहराई नहीं मिलती।' बात केवल परछाईं की नहीं है, पूर्णता की है। ज्यादातर लोग निराशा, अकेलापन, चुनौती, डर और उदासी के रंगों से दूर भागते हैं। वे जीवन में मुश्किल समय आते ही बेचैन हो उठते हैं जबकि मनुष्य की विकास यात्रा यही कहती है कि दुख, दर्द, कड़ी मेहनत, धैर्य और चुनौतियों के रंगों से मिलकर ही हमें जीत की चमक मिलती है। लेखक रे विलियम्स का मानना है कि बड़ी बारीकी से हम अपने दिमाग की नकारात्मक घेरबंदी करते चले जाते हैं, जो है उसके बारे में ध्यान नहीं देते, अभावों के विषय में सोचते चले जाते हैं और जीवन को जटिल बना लेते हैं।

प्रकृति हर दिन होली खेलती है, एक ही दिन में कई रंग बदलती है। दुख-दर्द का कोई रंग स्थायी नहीं होता। हमारी दुनिया रंगीन हो जाती है जब हम अपने रंगों से संतुष्ट हो जाते हैं और दूसरों का देखकर खुश होते हैं। [10 अंक]

1(i). 'हमें अपने रंगों का पता नहीं है' – से अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) अपने स्वभाव का ज्ञान नहीं है।

(B) जीवन की विविधता का ज्ञान नहीं है।

(C) अपनी विशेषताओं का ज्ञान नहीं है।

(D) अपनी परंपराओं का ज्ञान नहीं है।

सही उत्तर: (C) अपनी विशेषताओं का ज्ञान नहीं है।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में रंग मनुष्य की अपनी विशेषताओं और अलग पहचान के प्रतीक हैं।
- शब्द का अर्थ उसके आसपास के विचारों और प्रसंग से निर्धारित होता है।

चरण 1: रंगों का प्रतीकात्मक अर्थ लेखक मनुष्य को रंगों की विशाल दुनिया का एक रंग बताता है। यहाँ रंग शरीर के वर्ण के लिए नहीं, व्यक्ति के विशिष्ट गुणों और पहचान के लिए प्रयुक्त है। अपने रंग न जानने का अर्थ अपनी विशेषताओं से अनभिज्ञ रहना है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (C) में अपनी विशेषताओं का ज्ञान न होना कहा गया है, इसलिए यही सटीक अर्थ है। (A) का स्वभाव व्यक्ति की पहचान का केवल एक पक्ष है। (B) जीवन की विविधता की बात करता है, अपनी विशेषताओं की नहीं। (D) की परंपराओं का इस वाक्य में उल्लेख नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष अपनी विशेषताओं का ज्ञान नहीं है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: रूपक का अर्थ चुनते समय अगले वाक्य में आए दूसरों के रंगों से उसके संबंध को देखें।

1(ii). 'हम भूल जाते हैं कि जीवन बहुरंगी है' – पंक्ति में जीवन के बहुरंगी होने का अर्थ है – [1 अंक]

(A) जीवन का रंग-बिरंगा होना

(B) जीवन में दुख-तकलीफ का होना

(C) जीवन में सुख-दुख का होना

(D) जीवन का बहुत विशाल होना

सही उत्तर: (C) जीवन में सुख-दुख का होना

हल:

अवधारणा:

- जीवन के रंग सुख, दुख, संघर्ष और उपलब्धियों जैसे विविध अनुभवों के प्रतीक हैं।
- सही विकल्प वह है जो गद्यांश में आए विपरीत अनुभवों को साथ समेटता है।

चरण 1: संदर्भ पहचानना गद्यांश में लेखक कहता है कि सुख सतरंगी है और दुख के भी कई रंग हैं। आगे दुख, दर्द, मेहनत, धैर्य और चुनौतियों से जीत की चमक मिलने की बात है। अतः जीवन का बहुरंगी होना अलग-अलग परिस्थितियों और सुख-दुख के सम्मिलित अनुभव को बताता है।

चरण 2: चारों विकल्पों का मूल्यांकन (C) सुख और दुख दोनों को शामिल करता है। (A) रंग-बिरंगे होने का शाब्दिक अर्थ देता है और अनुभवों का आशय स्पष्ट नहीं करता। (B) केवल दुख-तकलीफ तक सीमित है। (D) का विशाल होना आकार का बोध देता है, अनुभवों की विविधता का नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष जीवन में सुख-दुख का होना ही उसका बहुरंगी होना है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: बहुरंगी जैसे प्रतीक के लिए ऐसा विकल्प चुनें जिसमें गद्यांश के दोनों विपरीत अनुभव समा जाएँ।

1(iii). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।

कथन : प्रकृति के कई रंग हैं और रंगों में कोई होड़ नहीं है।

कारण : प्रकृति सहज ही एक दिन में कई रंग बदलती है। [1 अंक]

(A) कारण सही है किंतु कथन गलत है।

(B) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं किंतु कारण कथन की गलत व्याख्या करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं किंतु कारण कथन की गलत व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता तथा उनके बीच व्याख्यात्मक संबंध अलग-अलग जाँचे जाते हैं।
- एक ही गद्यांश में दो बातें सही होने से वे अपने आप एक-दूसरे का कारण नहीं बनतीं।

चरण 1: कथन की सत्यता गद्यांश के आरंभ में स्पष्ट कहा गया है कि प्रकृति के कई रंग हैं और उन रंगों में कोई होड़ नहीं है। इसलिए कथन सही है। इससे विविधता और सह-अस्तित्व का विचार सामने आता है।

चरण 2: कारण की सत्यता अंतिम अनुच्छेद में प्रकृति के एक ही दिन में कई रंग बदलने की बात दी गई है। अतः कारण भी गद्यांश के अनुसार सही है। यह प्रकृति की परिवर्तनशीलता बताता है।

चरण 3: व्याख्या और विकल्प दिन में रंग बदलना यह स्पष्ट नहीं करता कि रंगों में होड़ क्यों नहीं है। अतः कारण कथन की सही व्याख्या

नहीं करता और (C) उपयुक्त है। (A) कथन को गलत, (B) दोनों को गलत और (D) कारण को सही व्याख्या बताता है; इसलिए वे स्वीकार्य नहीं हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पहले दोनों वाक्यों की सत्यता जाँचें, फिर देखें कि कारण कथन के पूरे आशय को स्पष्ट करता है या नहीं।

1(iv). प्रकृति के माध्यम से लेखक हमें क्या संदेश देना चाहता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति की रंग-विविधता मानवीय भिन्नताओं को स्वीकार करने का संदेश देती है।
- लेखक सहयोग, आत्मस्वीकृति और दूसरों की विशेषताओं के सम्मान को महत्त्व देता है।

चरण 1: प्रकृति से संकेत प्रकृति में कई रंग हैं, पर उनमें होड़ नहीं है। इससे लेखक बताता है कि अलग-अलग विशेषताएँ साथ रह सकती हैं। किसी को अपने जैसा बनाने की जबरदस्ती स्वाभाविक विविधता के विरुद्ध है।

चरण 2: जीवन में संदेश हमें अपने गुण पहचानकर उनसे संतुष्ट होना चाहिए और दूसरों की विशेषताओं को देखकर प्रसन्न होना चाहिए। आपसी सहयोग से जीवन में नए अनुभव जुड़ते हैं। दुख और चुनौतियों को भी जीवन का अंग मानकर धैर्य रखना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक विविधता स्वीकारने, अपने गुणों से संतुष्ट रहने, दूसरों की विशेषताओं का सम्मान करने और मिलकर सहयोग करने का संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: प्रकृति पर आधारित प्रश्न में उसके वर्णन के साथ लेखक की मनुष्य के लिए दी गई सीख भी जोड़ें।

1(v). रे विलियम्स के अनुसार जीवन की जटिलता का क्या कारण है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न रे विलियम्स के विचार को गद्यांश के आधार पर समझने का है।
- नकारात्मक दृष्टि उपलब्धियों की उपेक्षा और अभावों पर निरंतर ध्यान देने से बनती है।

चरण 1: विचार का आधार पहचानना रे विलियम्स के अनुसार मनुष्य धीरे-धीरे अपने दिमाग की नकारात्मक घेरबंदी करता जाता है। इसका अर्थ है कि वह परिस्थितियों को मुख्यतः कमी और असंतोष की दृष्टि से देखने लगता है। यह विचार गद्यांश में सीधे उनके मत के रूप में प्रस्तुत है, इसलिए उत्तर का आधार यही होना चाहिए।

चरण 2: जटिलता बनने की प्रक्रिया मनुष्य के पास जो कुछ है, वह उस पर ध्यान नहीं देता। वह अपनी उपलब्धियों और वर्तमान साधनों को देखने के बजाय उन चीजों के बारे में सोचता रहता है जो उसके पास नहीं हैं। अभावों पर लगातार केंद्रित यह दृष्टि असंतोष बढ़ाती है और जीवन को कठिन तथा उलझा हुआ अनुभव कराती है।

चरण 3: उत्तर को सीमित रखना गद्यांश जीवन की जटिलता का कारण बाहरी रंगों या प्रकृति को नहीं बताता। यहाँ कारण मनुष्य की अपनी सोच है। इसलिए धन, परिवार अथवा किसी दूसरे अनुल्लिखित कारण को जोड़ने के बजाय उपलब्ध वस्तुओं की उपेक्षा और अभावों पर एकाग्रता को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 4: निष्कर्ष रे विलियम्स के अनुसार मनुष्य उपलब्ध चीजों पर ध्यान देने के बजाय अभावों के बारे में सोचता रहता है। इससे वह अपने दिमाग की नकारात्मक घेरबंदी करता है और जीवन को स्वयं जटिल बना लेता है।

त्वरित सुझाव: जिस लेखक का मत पूछा गया हो, पहले उसका नाम वाला वाक्य खोजें और उसी के कारण-परिणाम को लिखें।

1(vi). 'दो रंग जुड़ते हैं तो एक नया ही रंग बन जाता है' – पंक्ति का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दो रंगों का मेल मानवीय सहयोग और भिन्न विशेषताओं के संयुक्त योगदान का रूपक है।
- भावार्थ में प्रतीक का अर्थ तथा उससे मिलने वाला मानवीय संदेश दोनों स्पष्ट होने चाहिए।

चरण 1: शाब्दिक और प्रतीकात्मक अर्थ सामान्य अर्थ में दो रंग मिलने पर नया रंग बनता है। गद्यांश में मनुष्य भी एक रंग है; इसलिए यहाँ दो रंग अलग-अलग व्यक्तियों की विशेषताओं, विचारों और अनुभवों को व्यक्त करते हैं। नया रंग उनके मेल से पैदा होने वाली नवीनता और जीवन की समृद्धि का प्रतीक है।

चरण 2: प्रसंग से संबंध इस पंक्ति के ठीक पहले लेखक सबको एक ही रंग में रंगने के बजाय एक-दूसरे को सहयोग देने की बात कहता है। अतः आशय किसी की अलग पहचान मिटाना नहीं है। भिन्नताओं को बनाए रखते हुए मिलकर काम करना ऐसी संभावनाएँ सामने लाता है जो अकेले व्यक्ति के प्रयास में नहीं बन पातीं।

चरण 3: भावार्थ तैयार करना जब अलग गुणों वाले लोग परस्पर सहयोग करते हैं, तो उनके विचार और अनुभव मिलकर जीवन में नई उपयोगिता तथा विविधता जोड़ते हैं। इसलिए दूसरों के रंगों से डरने के बजाय उनके गुण स्वीकारने चाहिए। यह व्याख्या गद्यांश के सहयोग और आपसी साथ के विचार पर आधारित है।

चरण 4: निष्कर्ष पंक्ति का आशय है कि भिन्न विशेषताओं वाले व्यक्तियों के सहयोग से नए विचार और अनुभव जन्म लेते हैं तथा जीवन अधिक समृद्ध और विविध बनता है।

त्वरित सुझाव: रूपक का भावार्थ लिखते समय रंग को व्यक्ति की विशेषता और नए रंग को सहयोग के परिणाम से जोड़ें।

1(vii). 'प्रकृति हर दिन होली खेलती है' – से क्या अभिप्राय है ? इसके माध्यम से क्या संदेश दिया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति की होली उसके निरंतर बदलते रंगों और रूपों का रूपक है।
- प्रश्न में अभिप्राय और संदेश दो अलग पक्ष हैं; दोनों का उत्तर देना आवश्यक है।

चरण 1: अभिप्राय स्पष्ट करना प्रकृति का हर दिन होली खेलना किसी वास्तविक त्योहार के आयोजन का वर्णन नहीं है। इसका आशय है कि प्रकृति प्रतिदिन और एक ही दिन में अपने अनेक रंग तथा रूप दिखाती है। इस निरंतर परिवर्तन से जीवन की विविधता और किसी एक स्थिति के स्थायी न होने का विचार सामने आता है।

चरण 2: परिवर्तन से मिलने वाला संदेश लेखक इसके साथ कहता है कि दुख-दर्द का कोई रंग स्थायी नहीं होता। अतः कठिन परिस्थिति आते ही निराश नहीं होना चाहिए। जैसे प्रकृति के रंग बदलते हैं, वैसे ही जीवन की परिस्थितियाँ भी बदलती हैं। धैर्य और सकारात्मक दृष्टि से विविध अनुभवों को स्वीकार करना चाहिए।

चरण 3: आत्मस्वीकृति का संबंध अंतिम पंक्ति अपने रंगों से संतुष्ट होने और दूसरों के रंग देखकर प्रसन्न होने को जीवन की रंगीनता का आधार बताती है। इसलिए संदेश में अपनी विशेषताओं की स्वीकृति तथा दूसरों की भिन्नता का सम्मान भी जुड़ता है। दुख और सुख दोनों को जीवन की पूर्णता में स्थान देना इसी दृष्टि का विस्तार है।

चरण 4: निष्कर्ष इस कथन का अभिप्राय प्रकृति के प्रतिदिन बदलते रंगों और रूपों से है। संदेश है कि दुख स्थायी नहीं हैं; हमें धैर्य रखकर जीवन की विविधता स्वीकारनी चाहिए तथा अपने और दूसरों के गुणों का सम्मान करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: दो हिस्सों वाले प्रश्न में पहले रूपक का अभिप्राय लिखें, फिर उसी प्रसंग से मिलने वाली सीख स्पष्ट करें।

2. है दीप एक पर मोल सूर्य से भी भारी
है व्यक्ति एक वर्तिका, दीप धरती सारी
देखो न दुखी हो व्यक्ति, उठे इंसानी लौ,
वनखंड जलाती सिर्फ एक ही चिनगारी।
है झंझापथ, पद आहत, दीपक मद्धिम है
संघर्ष, रातकाली, मंजिल पर रिमझिम है
लेकिन पुकारता आ पहुँचा युग इंसानी
दो कदम रह गया स्वर्ग चढ़ाई अन्तिम है।
दीपक, तेरे नीचे घिर रहा अँधेरा है
सोने की चमक तले अनीति का डेरा है
तू इंसानी जीवन की रात मिटा, वरना
इंसान स्वयं बनकर आ रहा सवेरा है। [8 अंक]

2(i). 'है दीप एक ..... सूर्य से भी भारी' – पंक्ति का आशय है – [1 अंक]

(A) एक अकेला शोषित व्यक्ति, संपूर्ण शोषक वर्ग से शक्तिशाली है।
(B) अकेला दीपक सूर्य के प्रकाश से अधिक प्रकाश प्रदान करने में सक्षम है।
(C) एक अकेला प्रकाश का स्रोत सूर्य से अधिक मूल्यवान है।
(D) दीपक सूर्य की ऊर्जा से अधिक ऊर्जा अपने भीतर रखता है।

सही उत्तर: (A) एक अकेला शोषित व्यक्ति, संपूर्ण शोषक वर्ग से शक्तिशाली है।

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में दीप और सूर्य व्यक्ति तथा व्यापक शक्ति के प्रतीक हैं।
- प्रतीकार्थ समझने के लिए अगली पंक्ति में आए व्यक्ति और इंसानी लौ से संबंध जोड़ना चाहिए।

चरण 1: पंक्ति का प्रसंग समझें कवि दीप का मूल्य सूर्य से अधिक बताकर छोटे दिखने वाले व्यक्ति की असाधारण सामर्थ्य रेखांकित करता है। आगे एक चिनगारी द्वारा वनखंड जलाने का उदाहरण भी बताता है कि अकेला व्यक्ति बड़े परिवर्तन का आरंभ कर सकता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें विकल्प (A) इसी मानवीय शक्ति को व्यक्त करता है। विकल्प (B) केवल प्रकाश की मात्रा, (C) प्रकाश स्रोत के भौतिक मूल्य और (D) ऊर्जा के भंडार की बात करते हैं। ये तीनों कथन प्रतीक को शाब्दिक अर्थ में लेते हैं और इंसानी संघर्ष के प्रसंग से मेल नहीं खाते।

चरण 3: निष्कर्ष एक अकेला शोषित व्यक्ति संपूर्ण शोषक वर्ग को चुनौती देने की शक्ति रखता है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: दीप और सूर्य का अर्थ तय करते समय अगली पंक्ति के व्यक्ति तथा इंसानी लौ जैसे शब्दों से उनका संबंध जोड़ें।

2(ii). 'इंसानी जीवन की रात मिटा' – से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) शोषित वर्ग के जीवन से रात्रि को दूर करना

(B) शोषित वर्ग के घरों को प्रकाशित करना

(C) इंसानों के जीवन से अंधकार को दूर करना

(D) शोषित वर्ग के अभावों को दूर कर, उन्हें अधिकार देना

सही उत्तर: (D) शोषित वर्ग के अभावों को दूर कर, उन्हें अधिकार देना

हल:

अवधारणा:

- कविता में रात अभाव, अन्याय और शोषण का प्रतीक है।
- पंक्ति का भावार्थ उसके आसपास आए अनीति और सवेरा शब्दों से स्पष्ट होता है।

चरण 1: रात के प्रतीक का अर्थ समझें सोने की चमक के नीचे अनीति का डेरा होने की बात आर्थिक वैभव और सामाजिक अन्याय को साथ रखती है। इसलिए इंसानी जीवन की रात से आशय केवल दिन के बाद आने वाली रात्रि नहीं, बल्कि मनुष्य के अभाव और अधिकारहीनता की स्थिति है।

चरण 2: उपयुक्त विकल्प चुनें विकल्प (D) अभाव दूर करने और अधिकार देने की बात करके इस सामाजिक आशय को स्पष्ट करता है। (A) प्राकृतिक रात्रि हटाने की शाब्दिक बात है। (B) घरों में प्रकाश की व्यवस्था तक सीमित है। (C) अंधकार दूर करने की सामान्य पुनरुक्ति है, जबकि (D) उसका अपेक्षित अर्थ खोलता है।

चरण 3: निष्कर्ष शोषित वर्ग के अभाव दूर करके उसे उसके अधिकार देना अभिप्रेत है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ के विकल्पों में उस विकल्प को चुनें जो प्रतीक का सामाजिक अर्थ स्पष्ट करे, केवल उसी प्रतीक को दोहरा न दे।

2(iii). कॉलम-1 को कॉलम-2 से सुमेलित कीजिए और सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए :

कॉलम-1	कॉलम-2
(क) मद्धिम दीपक	(1) लक्ष्य प्राप्ति के सीमित साधन
(ख) झंझापथ	(2) विपरीत परिस्थितियाँ
(ग) आहत पद	(3) घायल अंग

विकल्प : [1 अंक]

(A) क-2, ख-3, ग-1

(B) क-1, ख-2, ग-3

(C) क-3, ख-1, ग-2

(D) क-1, ख-3, ग-2

सही उत्तर: (B) क-1, ख-2, ग-3

हल:

अवधारणा:

- कविता के बिंबों का अर्थ उनके शाब्दिक संकेत और संघर्ष के प्रसंग को जोड़कर समझा जाता है।
- मद्धिम का अर्थ धीमा, झंझा का अर्थ तूफान तथा आहत का अर्थ घायल है।

चरण 1: तीनों बिंबों का अर्थ निर्धारित करें मद्धिम दीपक कम प्रकाश देने वाला दीप है; लक्ष्य तक पहुँचने के प्रसंग में वह सीमित साधनों का संकेत है, इसलिए क का मिलान 1 से होगा। झंझापथ तूफानों से भरा मार्ग है, जो विपरीत परिस्थितियों का प्रतीक है; इसलिए ख का

मिलान 2 से होगा।

चरण 2: मिलान की पुष्टि करें आहत पद का अर्थ घायल पैर है; अतः ग का मिलान घायल अंग अर्थात् 3 से होगा। पूरा क्रम क-1, ख-2, ग-3 है। विकल्प (A) और (C) में मद्धिम दीपक का अर्थ गलत है। (D) में झंझापथ और आहत पद के अर्थ आपस में बदल दिए गए हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही सुमेलन क-1, ख-2, ग-3 है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पहले आहत पद का सीधा अर्थ घायल पैर पहचानें, फिर झंझापथ में झंझा के अर्थ से दूसरे मिलान की पुष्टि करें।

2(iv). 'इंसान स्वयं सवेरे का रूप धारण कर आ रहा है' - पंक्ति के माध्यम से किसे क्या चेतावनी दी गई है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता का अंतिम अंश अन्याय मिटाने के लिए चेतावनी देता है।
- सवेरा जागृति और परिवर्तन का प्रतीक है; उसका अर्थ प्रसंग से ग्रहण करना चाहिए।

चरण 1: चेतावनी पाने वाले को पहचानें सोने की चमक तले अनीति का डेरा होने की पंक्ति से संबोधन का सामाजिक आशय स्पष्ट होता है। चेतावनी उन संपन्न और शक्तिशाली लोगों को है जिनके प्रभाव के नीचे भी साधारण मनुष्य का जीवन शोषण और अभाव के अँधेरे में घिरा है।

चरण 2: चेतावनी का आशय स्पष्ट करें कवि कहता है कि वे मनुष्यों के जीवन से अन्याय और अभाव दूर करें। यदि वे ऐसा नहीं करेंगे, तो जागरूक मनुष्य स्वयं संगठित संघर्ष से परिवर्तन लाएगा। स्वयं सवेरा बनकर आने का अर्थ अपने प्रयास से मुक्ति और नए जीवन की शुरुआत करना है।

चरण 3: निष्कर्ष शोषक और शक्तिशाली वर्ग को चेतावनी है कि वह अन्याय मिटाए, अन्यथा जागरूक मनुष्य स्वयं संघर्ष करके शोषण का अँधेरा दूर करेगा।

त्वरित सुझाव: चेतावनी वाले प्रश्न में उत्तर के दो पक्ष स्पष्ट रखें: संबोधन किसे है और उसे किस परिणाम से सावधान किया गया है।

2(v). 'वनखंड जलाती है एक चिनगारी' – पंक्ति से क्या अभिप्राय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चिनगारी छोटी होते हुए भी व्यापक अग्नि का आरंभ कर सकती है।
- कवि इस प्राकृतिक बिंब द्वारा व्यक्ति की परिवर्तनकारी क्षमता और साहस का महत्त्व समझाता है।

चरण 1: बिंब का प्रत्यक्ष अर्थ समझें वनखंड जंगल का एक विस्तृत भाग है। उसके सामने छोटी-सी चिनगारी नगण्य दिखाई देती है, फिर भी वही फैलती हुई आग का आरंभ कर सकती है। इस उदाहरण में आरंभिक आकार और उसके प्रभाव के विस्तार के बीच का अंतर विशेष महत्त्व रखता है। छोटी शुरुआत से बड़ा परिणाम निकल सकता है।

चरण 2: मानवीय संदर्भ से संबंध जोड़ें इससे पहले कवि व्यक्ति को दुखी न होने और इंसानी लौ उठाने का आह्वान करता है। अतः चिनगारी का संकेत साहसी और जागरूक व्यक्ति से है। अकेला व्यक्ति स्वयं को असहाय समझकर निराश न हो; उसका संकल्प दूसरों को प्रेरित करके अन्याय के विरुद्ध व्यापक परिवर्तन की शुरुआत कर सकता है। यह मनुष्यों को आग लगाने का संदेश नहीं, जागृति और संघर्ष की शक्ति का प्रतीकात्मक वर्णन है।

चरण 3: निष्कर्ष जैसे एक छोटी चिनगारी विशाल वनखंड में आग फैला सकती है, वैसे ही एक जागरूक और साहसी व्यक्ति बड़े सामाजिक परिवर्तन का आरंभ कर सकता है। कवि व्यक्ति को अपनी शक्ति पहचानने और निराश न होने की प्रेरणा देता है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक का अर्थ लिखते समय पहले छोटी चिनगारी और बड़े प्रभाव का संबंध बताएँ, फिर उसे व्यक्ति की सामर्थ्य से जोड़ें।

2(vi). 'इंसानी युग आने और स्वर्ग के दो कदम दूर रह जाने' – से क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इंसानी युग मानवीय गरिमा, न्याय और अधिकारों पर आधारित जीवन का संकेत है।
- स्वर्ग यहाँ सुखपूर्ण जीवन का प्रतीक है और दो कदम लक्ष्य की निकटता व्यक्त करते हैं।

चरण 1: इंसानी युग का आशय स्पष्ट करें कविता में रात, अनीति और आहत पद के साथ इंसानी युग का उल्लेख आता है। इससे ऐसे नए समय की कल्पना उभरती है जिसमें मनुष्य की पीड़ा दूर हो और उसके सम्मान तथा अधिकारों को महत्त्व मिले। कवि संघर्षरत मनुष्य को भरोसा देता है कि मानवीय चेतना का यह समय अब निकट आ पहुँचा है।

चरण 2: स्वर्ग की निकटता का भाव समझें स्वर्ग से आशय मृत्यु के बाद मिलने वाला कोई स्थान नहीं, बल्कि इसी धरती पर सुख, समानता और न्याय से युक्त जीवन है। दो कदम रह जाने और अंतिम चढ़ाई का कथन बताता है कि लक्ष्य निकट है, हालाँकि अंतिम प्रयास अभी बाकी है। झंझापथ, घायल पैर और मद्धिम दीपक के बावजूद मनुष्य को धैर्य तथा संघर्ष बनाए रखना चाहिए। अंतिम कठिनाई देखकर निराश होने के स्थान पर उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा दी गई है।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों का आशय है कि न्याय और मानवीय गरिमा पर आधारित सुखपूर्ण जीवन का समय निकट है। संघर्ष का अंतिम चरण शेष है; इसलिए मनुष्य को निराश हुए बिना निरंतर प्रयास करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: स्वर्ग को प्रसंगानुसार धरती के सुखपूर्ण जीवन का प्रतीक मानें और दो कदम को अंतिम प्रयास की प्रेरणा से जोड़ें।

3(i). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
राजमार्ग (हाईवे) पर पिताजी की गाड़ी का अचानक बंद हो जाना [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में किसी अनुभव को दृश्य, भाव और घटनाक्रम के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ केंद्र में राजमार्ग पर अचानक गाड़ी बंद होने की घटना और उससे उपजी मन:स्थिति है।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में एक प्रभावी शीर्षक, घटना का संक्षिप्त आरंभ, संकट का विकास और सार्थक अंत रखें। प्रथम पुरुष शैली अनुभव को आत्मीय बनाती है।

चरण 1: प्रारूप और कथानक की योजना बनाएँ लेख के लिए संक्षिप्त शीर्षक चुनें। आरंभ में यात्रा का वातावरण दिखाएँ और फिर गाड़ी के रुकने से कहानी में मोड़ लाएँ। बीच में पिताजी की सावधानी, अपनी घबराहट और सहायता के प्रयास रखें। अंत में समस्या का समाधान तथा उससे मिली सीख जोड़ें। यह व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित रचना है, इसलिए पत्र जैसा संबोधन या समाचार जैसी तिथि देना आवश्यक नहीं है।

चरण 2: घटना और भावों का संतुलन रखें केवल गाड़ी की खराबी का तकनीकी विवरण न दें। सुनसान सड़क, ढलती शाम और दूर तक जाती गाड़ियों जैसे छोटे दृश्य परिस्थिति स्पष्ट करते हैं। अपनी भूमिका भी दिखाएँ, जैसे सहायता के लिए फोन करना। घटनाओं का क्रम स्वाभाविक रहे और समाधान अचानक चमत्कार की तरह न आए। घबराहट से धैर्य तक का बदलाव लेख को भावात्मक पूर्णता देता है।

चरण 3: संपूर्ण आदर्श लेख लिखें **राह में मिला धैर्य का सबक**

रविवार को हम गाँव जा रहे थे। राजमार्ग पर दौड़ती गाड़ी अचानक झटके से बंद हो गई। पिताजी ने सावधानी से उसे सड़क के किनारे रोका और चेतावनी बत्तियाँ जला दीं। सामने लंबी सड़क थी और शाम ढल रही थी। मेरा उत्साह घबराहट में बदल गया। पिताजी ने हमें सुरक्षित स्थान पर खड़ा किया और सहायता सेवा को फोन किया। मैंने स्थान की जानकारी भेजने में उनकी मदद की। प्रतीक्षा के वे मिनट बहुत लंबे लगे। कुछ देर बाद सहायता वाहन पहुँचा। मिस्त्री ने खराबी जाँचकर गाड़ी ठीक कर दी। इंजन की आवाज सुनते ही सबके चेहरे खिल उठे। उस दिन समझ आया कि मुश्किल रास्ते से अधिक जरूरी शांत मन और सही निर्णय हैं।

चरण 4: निष्कर्ष यह रचना यात्रा में आए संकट को क्रमबद्ध घटनाओं, व्यक्तिगत भावों और व्यावहारिक समाधान के साथ प्रस्तुत करती है। धैर्य तथा सूझबूझ की सीख उसका प्रभावी समापन है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में यात्रा, अचानक बाधा, सहायता और सीख का क्रम रखें; गाड़ी बंद होने की घटना के साथ अपनी बदलती भावनाएँ अवश्य दिखाएँ।

3(ii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
बड़े भाई / बहन की शादी में मेरी भूमिका [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुभवपरक रचनात्मक लेखन में लेखक की भागीदारी और उसकी अनुभूतियाँ केंद्र में रहती हैं। इस विषय में विवाह समारोह के सामान्य वर्णन से अधिक अपनी जिम्मेदारियों और भावनाओं को स्थान देना आवश्यक है।
- लगभग 120 शब्दों में शीर्षक, तैयारी, समारोह में निभाई भूमिका और भावपूर्ण समापन रखें। बड़े भाई या बहन में से किसी एक को चुनकर पूरे लेख में उसी संबंध को बनाए रखें।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु तय करें यहाँ बड़ी बहन की शादी को अनुभव का आधार बनाया गया है। संक्षिप्त शीर्षक के बाद घर के उत्सवमय वातावरण से आरंभ करें। फिर अपनी जिम्मेदारियाँ स्पष्ट करें, जैसे अतिथियों का स्वागत, सामान सँभालना और व्यवस्थाओं में सहयोग। अंतिम भाग में बहन की विदाई और अपनी अनुभूति रखें। रचनात्मक लेख के लिए पत्र वाला पता, विषय और संबोधन आवश्यक नहीं हैं।

चरण 2: अपनी भूमिका को केंद्र में रखें भोजन, सजावट और बारात का लंबा विवरण देने से प्रश्न का मुख्य उद्देश्य पीछे छूट सकता है। इसलिए हर प्रमुख घटना को अपने कार्य या भाव से जोड़ें। कामों की सूची भर न दें; किसी छोटी समस्या और उसके समाधान का उल्लेख भूमिका को जीवंत बनाता है। प्रसन्नता, जिम्मेदारी और विदाई की उदासी का स्वाभाविक मेल अनुभव को पूर्ण करता है।

चरण 3: संपूर्ण आदर्श लेख लिखें **बहन की शादी, मेरी जिम्मेदारी**

बड़ी बहन की शादी में हमारा घर खुशियों से भर गया था। इस बार मैं केवल मेहमान नहीं, व्यवस्थाओं में सहयोगी भी था। अतिथियों का स्वागत करना, उन्हें कमरों तक पहुँचाना और आवश्यक सामान सँभालना मेरी जिम्मेदारी थी। मैंने छोटे बच्चों के साथ फूलों की मालाएँ सजाईं और संगीत समारोह के लिए गीत चुने। एक अतिथि का सामान नहीं मिल रहा था। खोजने पर वह दूसरे कमरे में मिला; उसे लौटाकर मुझे बहुत संतोष हुआ। विवाह के दिन बहन की छोटी जरूरतों का ध्यान रखते हुए समय बीत गया। विदाई आई तो मेरी आँखें भर आईं। बहन ने गले लगाकर धन्यवाद दिया। उस क्षण लगा कि जिम्मेदारियाँ निभाने से उत्सव की खुशी और रिश्तों की मिठास बढ़ जाती है।

चरण 4: निष्कर्ष लेख में बहन की शादी के दौरान स्वागत, सजावट और सहायता की जिम्मेदारियों के साथ विदाई की आत्मीय अनुभूति व्यक्त हुई है। इससे विषय में माँगी गई अपनी भूमिका स्पष्ट रहती है।

त्वरित सुझाव: शादी के वर्णन में प्रत्येक मुख्य प्रसंग के साथ अपना काम जोड़ें और अंत में विदाई की एक सच्ची अनुभूति लिखें; सामान्य उत्सव-वर्णन तक सीमित न रहें।

3(iii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
जीव-जंतुओं का घटता संसार [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़े अनुभव, संवेदना और विचारों को मौलिक भाषा में अभिव्यक्त किया जाता है।

- जीव-जंतुओं के घटते संसार पर लेख में समस्या के कारण, उसके परिणाम और संरक्षण की आवश्यकता का स्वाभाविक क्रम उपयुक्त है।

चरण 1: लेख की रूपरेखा प्रारंभ में पक्षियों और पशुओं से भरे परिवेश की स्मृति जगाएँ। फिर जंगल कटने, प्रदूषण और शिकार से उनके आवासों के नष्ट होने की चर्चा करें। अंत में मनुष्य की जिम्मेदारी और व्यावहारिक संरक्षण का संदेश दें। भाषा चित्रात्मक हो, किंतु लेख तथ्यहीन आँकड़ों या नारों की सूची में न बदल जाए। शीर्षक संक्षिप्त और विषयानुकूल रखें। लेख का आरंभ और अंत आपस में जुड़े हों: आरंभ में चिड़ियों के स्वर का अभाव है और अंत में सभी जीवों के निर्भय जीवन की कामना। समस्या का उल्लेख करते समय मनुष्य और अन्य प्राणियों के परस्पर संबंध को केंद्र में रखें। यह विषय पर्यावरण के साथ करुणा और सहअस्तित्व की भावना भी माँगता है।

चरण 2: पूर्ण रचनात्मक लेख **जीव-जंतुओं का घटता संसार**

कभी सुबह चिड़ियों की चहचहाहट से खुलती थी; आज खिड़की के बाहर गाड़ियों का शोर है। पेड़ों की जगह इमारतें उग रही हैं और जंगलों में रहने वाले जीव अपने ही घर से बेघर हो रहे हैं। प्रदूषित नदियाँ मछलियों को निगल रही हैं; लालच से भरा शिकार अनेक प्रजातियों का अस्तित्व मिटा रहा है। क्या विकास की दौड़ में केवल मनुष्य को जीने का अधिकार है? हर तितली, पक्षी और पशु प्रकृति के संतुलन की एक आवश्यक कड़ी है। उनका लुप्त होना अंततः हमारे जीवन को भी संकट में डालेगा। हमें जंगल बचाने, जलस्रोत स्वच्छ रखने और वन्यजीवों के अवैध व्यापार को रोकने का संकल्प लेना होगा। धरती तभी सुंदर रहेगी, जब इसके आँगन में सभी जीव निर्भय साँस ले सकेंगे।

चरण 3: निष्कर्ष जीव-जंतुओं और उनके प्राकृतिक आवासों का संरक्षण पृथ्वी के संतुलन तथा मानव जीवन की सुरक्षा के लिए आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: लगभग 120 शब्दों के लेख में एक सजीव दृश्य से शुरुआत करें और संरक्षण के ठोस संकल्प पर समाप्त करें।

4(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'लेखन दो खंभों के बीच बँधी रस्सी की तरह नहीं होता, उसमें खुले मैदान में दौड़ने, कूदने और कुलाँचे भरने की छूट होती है।' सिद्ध कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेखन में कल्पना, अनुभव और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होती है।
- रस्सी और खुले मैदान की तुलना बंधन तथा सर्जनात्मक संभावनाओं का अंतर स्पष्ट करती है।

चरण 1: कथन का आशय समझें दो खंभों के बीच बँधी रस्सी एक सीमित और पूर्वनिर्धारित मार्ग का संकेत है। खुले मैदान का बिंब लेखक को मिलने वाली कल्पना और प्रयोग की स्वतंत्रता दर्शाता है। यह स्वतंत्रता विषय से भटकना नहीं, उसे अपने अनुभव और दृष्टि से नया रूप देना है। लेखक विषयानुकूल रूपकों, प्रसंगों और भाषा के चयन से अपनी मौलिक दृष्टि व्यक्त कर सकता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लेखन किसी निश्चित ढाँचे में बँधी यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है। लेखक कल्पना, अनुभव और संवेदना के सहारे विषय को नए ढंग से प्रस्तुत करता है। भाषा, शैली और प्रस्तुति में प्रयोग की यही स्वतंत्रता उसे खुले मैदान जैसी असीम सर्जनात्मक संभावनाएँ देती है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन लेखन की कल्पनाशीलता, मौलिकता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को रेखांकित करता है।

त्वरित सुझाव: रस्सी को सीमित मार्ग और खुले मैदान को कल्पना की स्वतंत्रता से जोड़कर कथन का आशय स्पष्ट करें।

4(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

फिल्म की तरह रेडियो नाटक में एक्शन प्रधान कथा के लिए गुंजाइश क्यों नहीं होती ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो केवल श्रव्य माध्यम है; श्रोता पात्रों और घटनाओं को सुनकर उनकी कल्पना करता है।
- रेडियो नाटक में संवाद, ध्वनि प्रभाव और संगीत दृश्य के स्थान पर वातावरण तथा घटनाक्रम का बोध कराते हैं।

चरण 1: दोनों माध्यमों की प्रकृति समझें फिल्म में कैमरा दौड़, लड़ाई या पीछा करने जैसे दृश्य सीधे दिखा सकता है। रेडियो में दृश्य दिखाई नहीं देते। तेज और जटिल शारीरिक गतिविधियों को केवल आवाजों से अलग-अलग पहचानना कठिन होता है; इसलिए ऐसी कथा का स्पष्ट संप्रेषण सीमित रहता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर रेडियो श्रव्य माध्यम है, जबकि फिल्म में घटनाएँ दिखाई भी देती हैं। एक्शन प्रधान कथा की तेज दृश्यात्मक गतिविधियाँ केवल ध्वनियों से स्पष्ट नहीं हो पातीं। इसलिए रेडियो नाटक में संवाद, ध्वनि प्रभाव और संगीत से कथा तथा वातावरण उभारने पर अधिक बल होता है।

चरण 3: निष्कर्ष दृश्य के अभाव में रेडियो नाटक में फिल्म जैसी एक्शन प्रधान कथा की गुंजाइश सीमित होती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले रेडियो को श्रव्य माध्यम बताएँ, फिर दृश्यात्मक एक्शन के संप्रेषण की कठिनाई स्पष्ट करें।

4(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

कहानी में वर्णित पात्रों के मनोभावों और द्वंद्व को नाटक में किस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में कथावाचक पात्र की भीतरी स्थिति सीधे बता सकता है; नाटक में वही स्थिति मंच पर देखने और सुनने योग्य बनानी पड़ती है।
- संवाद, स्वगत कथन, अभिनय और रंगसंकेत मनोभाव तथा आंतरिक संघर्ष को व्यक्त करने के प्रमुख साधन हैं।

चरण 1: प्रस्तुति के साधन पहचानें पात्र की चिंता, प्रसन्नता या उलझन उसके शब्दों के साथ स्वर, विराम, मुखमुद्रा और हावभाव से दिखाई जाती है। मन के भीतर चल रहा द्वंद्व स्वगत कथन में व्यक्त हो सकता है। विरोधी इच्छाओं को दूसरे पात्र के साथ संवाद या उसके व्यवहार से भी उभारा जा सकता है।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर लिखें कहानी के पात्रों के मनोभावों और द्वंद्व को नाटक में संवाद, स्वगत कथन तथा अभिनय द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। चेहरे के भाव, हावभाव, स्वर के उतार-चढ़ाव और उपयुक्त रंगसंकेत उनके भीतरी संघर्ष को दर्शकों के सामने सजीव बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष मनोभावों को संवाद और स्वगत कथन के साथ अभिनय तथा रंगसंकेतों के माध्यम से मंच पर अभिव्यक्त किया जाता है।

त्वरित सुझाव: भीतरी भावना को मंचीय क्रिया से जोड़ें; केवल संवाद लिखकर अभिनय और स्वगत कथन को न भूलें।

4(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

पत्रकारिता की भाषा में 'बीट' से क्या अभिप्राय है ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बीट समाचार संकलन के लिए किसी संवाददाता को सौंपा गया निश्चित विषय, क्षेत्र या विभाग होता है।
- उदाहरण देते समय विषय और उस विषय की खबरें जुटाने वाले संवाददाता के दायित्व का संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: अर्थ और सीमा समझें समाचार संस्थान काम के व्यवस्थित बँटवारे के लिए पत्रकारों को अलग-अलग क्षेत्र सौंपते हैं। संवाददाता अपने निर्धारित क्षेत्र की घटनाओं पर नियमित नज़र रखता है और संबंधित स्रोतों से सूचना प्राप्त करता है। इस दायित्व को बीट कहते हैं; इसका अर्थ केवल किसी एक समाचार से नहीं है।

चरण 2: उदाहरण सहित उत्तर लिखें पत्रकारिता में बीट उस निश्चित विषय, क्षेत्र या विभाग को कहते हैं, जिसकी खबरें जुटाने का दायित्व किसी संवाददाता को दिया जाता है। जैसे शिक्षा बीट का संवाददाता विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, परीक्षाओं और शिक्षा विभाग से जुड़ी घटनाओं तथा नीतियों की रिपोर्टिंग करता है।

चरण 3: निष्कर्ष बीट संवाददाता को सौंपा गया समाचार संकलन का निश्चित क्षेत्र है; शिक्षा, खेल और अपराध इसके उदाहरण हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा के तुरंत बाद एक बीट और उससे संबंधित दो तरह की खबरों का उदाहरण दें।

4(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

खोजी रिपोर्ट से आप क्या समझते हैं ? पत्रकारिता के क्षेत्र में इसका क्या महत्त्व है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खोजी रिपोर्ट छिपे तथ्यों को गहन पड़ताल, दस्तावेजों और विश्वसनीय स्रोतों के आधार पर सामने लाती है।
- इसका महत्त्व जनहित की रक्षा, अनियमितताओं के खुलासे तथा जिम्मेदार व्यक्तियों और संस्थाओं की जवाबदेही में है।

चरण 1: सामान्य सूचना और खोजी पड़ताल समझें खोजी रिपोर्ट उपलब्ध बयान को ज्यों का त्यों दोहराने तक सीमित नहीं होती। पत्रकार दबाई गई जानकारी की तलाश करता है, प्रमाण जुटाता है और तथ्यों की पुष्टि करता है। इसलिए अपुष्ट आरोप या सनसनी को खोजी रिपोर्ट नहीं कहा जा सकता; विश्वसनीय साक्ष्य इसका आधार हैं।

चरण 2: अर्थ और महत्त्व का उत्तर लिखें खोजी रिपोर्ट वह रिपोर्ट है, जिसमें पत्रकार गहन जाँच और प्रमाणों के आधार पर छिपाए गए तथ्यों, भ्रष्टाचार या अनियमितताओं को उजागर करता है। यह जनता को सच से अवगत कराती है, जनहित की रक्षा करती है और जिम्मेदार लोगों की जवाबदेही तय करने में सहायक होती है।

चरण 3: निष्कर्ष खोजी रिपोर्ट प्रमाणयुक्त पड़ताल से छिपा सच उजागर करती है और पत्रकारिता को जनहित तथा जवाबदेही का प्रभावी माध्यम बनाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में खोजी रिपोर्ट का आधार प्रमाण बताइए और उसका महत्त्व जनहित तथा जवाबदेही से जोड़िए।

5(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

व्यक्तिचित्र फीचर को रोचक, पठनीय और प्रभावशाली रूप में किस प्रकार तैयार किया जा सकता है ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तिचित्र फ़ीचर किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व, कार्य और जीवनानुभवों का तथ्यपूर्ण तथा संवेदनशील चित्र प्रस्तुत करता है।
- इसकी रोचकता सजीव प्रसंगों से और विश्वसनीयता साक्षात्कार, प्रत्यक्ष अवलोकन तथा जाँचे हुए तथ्यों से बनती है।

चरण 1: उत्तर की रूपरेखा उत्तर में सामग्री-संग्रह, आकर्षक आरंभ, व्यक्तित्व का बहुआयामी चित्रण और भाषा-शैली को क्रम से जोड़ना चाहिए। केवल जन्म, शिक्षा और उपलब्धियों की सूची देना पर्याप्त नहीं है। व्यवहार तथा अनुभवों से व्यक्ति का विशिष्ट स्वरूप सामने आना चाहिए।

चरण 2: प्रस्तुति की कसौटी व्यक्ति का कोई ऐसा प्रसंग चुनें जो उसके स्वभाव को प्रकट करे। कथनों को संदर्भ सहित रखें और अनावश्यक विशेषणों से बचें। परिचितों की राय तथा लेखक के अवलोकन में अंतर स्पष्ट रहना चाहिए। इससे लेख केवल विवरण न रहकर पाठक के सामने व्यक्ति की जीवंत उपस्थिति बनता है।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में उत्तर व्यक्तिचित्र फ़ीचर तैयार करने के लिए व्यक्ति से बातचीत, उसके परिचितों के साक्षात्कार तथा प्रत्यक्ष अवलोकन से प्रामाणिक सामग्री जुटानी चाहिए। आरंभ किसी रोचक घटना, दृश्य या कथन से करें। व्यक्ति की वेशभूषा, हावभाव, रुचियों, संघर्षों और उपलब्धियों को सजीव प्रसंगों के माध्यम से उभारें। केवल प्रशंसा न करके उसके व्यक्तित्व के विविध पक्षों का संतुलित चित्र दें। भाषा सरल, आत्मीय और चित्रात्मक हो। आकर्षक शीर्षक, उपयुक्त उद्धरण तथा प्रभावपूर्ण समापन फ़ीचर को पठनीय और यादगार बनाते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष प्रामाणिक तथ्यों, प्रतिनिधि प्रसंगों और सजीव भाषा का संतुलन व्यक्तिचित्र को रोचक तथा प्रभावशाली बनाता है।

त्वरित सुझाव: व्यक्तिचित्र के उत्तर में सामग्री कैसे जुटाएँ और उसे कैसे प्रस्तुत करें, इन दोनों पक्षों को अवश्य शामिल करें।

5(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

संवाददाता और विशेष संवाददाता के बीच के अंतर को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संवाददाता समाचार-संस्था के लिए घटनाओं की जानकारी एकत्र करता है और तथ्यों के आधार पर समाचार तैयार करता है।
- विशेष संवाददाता किसी विषय या क्षेत्र का अनुभवी पत्रकार होता है, जो समाचार की पृष्ठभूमि और महत्त्व की गहन पड़ताल करता है।

चरण 1: तुलना के आधार निर्धारित करना दोनों की तुलना कार्यक्षेत्र, विशेषज्ञता और समाचार प्रस्तुत करने की गहराई के आधार पर करें। विशेष संवाददाता को केवल किसी बड़े नगर का संवाददाता कहना उचित नहीं है। अंतर स्पष्ट करने के लिए एक ही घटना के सामान्य समाचार और उसके विश्लेषण का उदाहरण सबसे उपयोगी है।

चरण 2: उदाहरण का चयन बजट की घोषणा दोनों प्रकार के काम समझाने का अच्छा उदाहरण है। घोषणा में दिए गए निर्णयों को तथ्यात्मक रूप में बताना समाचार-संग्रह का काम है। उन्हीं निर्णयों का अर्थव्यवस्था और विभिन्न वर्गों पर प्रभाव समझाने के लिए विषयगत ज्ञान, पुराने आँकड़ों और विशेषज्ञों की राय की आवश्यकता होती है। दोनों के लिए तथ्यों की जाँच अनिवार्य है।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में उत्तर संवाददाता अपने निर्धारित क्षेत्र की दैनिक घटनाओं के तथ्य जुटाकर समाचार भेजता है। उसका मुख्य ध्यान क्या, कब, कहाँ और कैसे हुआ, बताने पर रहता है। विशेष संवाददाता राजनीति, अर्थव्यवस्था या विदेश मामलों जैसे किसी क्षेत्र का अनुभवी और जानकार पत्रकार होता है। वह घटना की पृष्ठभूमि, कारण और संभावित प्रभावों की गहन पड़ताल करता है। उदाहरणतः संवाददाता बजट की घोषणाओं का समाचार देगा, जबकि आर्थिक मामलों का विशेष संवाददाता कर-परिवर्तनों का आम जनता और अर्थव्यवस्था पर प्रभाव समझाएगा।

चरण 4: निष्कर्ष संवाददाता दैनिक समाचार देता है; विशेष संवाददाता विषयगत विशेषज्ञता के सहारे समाचार की गहरी व्याख्या प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: अंतर लिखते समय केवल पदनाम न बताएँ; समान घटना पर दोनों की अलग भूमिका दिखाने वाला उदाहरण दें।

5(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

कहानी के पात्रों का नाट्य रूपांतरण किस प्रकार किया जा सकता है ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में वर्णित पात्र नाटक में संवाद, अभिनय और मंचीय क्रिया के माध्यम से सजीव बनते हैं।
- रूपांतरण में मूल चरित्र, उद्देश्य और संबंध सुरक्षित रहते हैं, किंतु प्रस्तुति मंच के अनुकूल होती है।

चरण 1: उत्तर की रूपरेखा पहले कहानी के प्रमुख पात्रों, उनके स्वभाव, आपसी संबंधों और संघर्ष को पहचानना चाहिए। फिर यह तय करना चाहिए कि कथावाचक द्वारा बताई गई कौन-सी बातें संवाद या क्रिया द्वारा दिखाई जा सकती हैं। अनावश्यक पात्र घटाए जा सकते हैं, लेकिन मूल कथ्य और चरित्र की विशेषताएँ सुरक्षित रहनी चाहिए।

चरण 2: मंचीय प्रस्तुति की जाँच संवाद केवल कहानी की भाषा को दोहराएँ नहीं, बल्कि पात्र के व्यक्तित्व को उभारें और घटनाओं को आगे बढ़ाएँ। लंबा विवरण अभिनय योग्य छोटे प्रसंगों में बदला जा सकता है। पात्र के प्रवेश, प्रस्थान और प्रतिक्रिया के संकेत दिए जा सकते हैं। रूपांतरण के बाद यह जाँचना चाहिए कि दर्शक पात्र की भावना मंच पर देखकर समझ सकता है या नहीं। इससे वर्णन पर निर्भरता घटती है तथा प्रस्तुति प्रभावी बनती है।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर कहानी के पात्रों का नाट्य रूपांतरण करते समय उनके स्वभाव, उद्देश्य, संबंधों और संघर्ष को समझकर उन्हें मंच के अनुकूल बनाया जाता है। कथाकार द्वारा किया गया चरित्र-वर्णन पात्रों के संवाद, हाव-भाव, वेशभूषा और क्रिया-व्यापार से व्यक्त किया जाता है। उनके अंतर्द्वंद्व को स्वगत कथन या अन्य पात्रों से बातचीत द्वारा सामने लाया जा सकता है। संवाद पात्र की आयु, शिक्षा और सामाजिक स्थिति के अनुरूप हों। अनावश्यक पात्रों को हटाकर भी मूल चरित्र तथा कहानी के केंद्रीय भाव को सुरक्षित रखना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार पात्रों का वर्णन अभिनय योग्य संवाद और क्रिया में बदलना ही उनके सफल नाट्य रूपांतरण का आधार है।

त्वरित सुझाव: पात्र के बारे में बताई गई हर बात के लिए सोचिए कि अभिनेता उसे संवाद, हाव-भाव या क्रिया से कैसे दिखाएगा।

6. धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहूकी बेटी सो बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ।।
तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।।
माँगि कै खैबौ, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबको दोऊ। [5 अंक]

6(i). काव्यांश का वर्ण्य विषय है – [1 अंक]

(A) समाज की आर्थिक स्थिति का वर्णन
(B) जाति-पाँतिगत भेदभाव का वर्णन
(C) समाज में विद्यमान भेदभाव का वर्णन
(D) धर्म के नाम पर हो रहे आडंबरों का वर्णन

सही उत्तर: (B) जाति-पाँतिगत भेदभाव का वर्णन

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश का केंद्रीय विषय पहचानने के लिए बार-बार आए भाव और शब्दों को साथ पढ़ना चाहिए।
- जाति, विवाह और सामाजिक पहचान के संदर्भ यहाँ जातिगत ऊँच-नीच के विरोध को व्यक्त करते हैं।

चरण 1: केंद्रीय संकेत पहचानना 'रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ' में जाति के आधार पर लगाई जाने वाली पहचान है। 'काहूकी जाति बिगार न सोऊ' जाति की कथित शुद्धता के आग्रह पर व्यंग्य है। तुलसी इन भेदों की उपेक्षा कर स्वयं को राम का सेवक कहते हैं।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (B) सीधे जाति-पाँतिगत भेदभाव को व्यक्त करता है। (A) आर्थिक स्थिति को मुख्य विषय बनाता है, जबकि माँगकर खाने का उल्लेख निर्लिप्तता बताता है। (C) भेदभाव का व्यापक, कम विशिष्ट कथन है। (D) धार्मिक आडंबर को केंद्र बनाता है, जिसका यहाँ प्रमुख विवेचन नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का वर्ण्य विषय जाति-पाँतिगत भेदभाव है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: व्यापक विकल्प और विशिष्ट विकल्प साथ हों तो काव्यांश के प्रमुख शब्दों से सबसे सटीक विषय चुनिए।

6(ii). 'काहूकी बेटी सो बेटा न ब्याहब' – पंक्ति के माध्यम से कटाक्ष किया गया है – [1 अंक]

(A) समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था पर
(B) जाति आधारित वैवाहिक प्रथा पर
(C) पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता पर
(D) समाज की विघटनकारी व्यवस्था पर

सही उत्तर: (B) जाति आधारित वैवाहिक प्रथा पर

हल:

अवधारणा:

- पंक्ति का आशय उसके प्रमुख शब्दों और प्रसंग से स्पष्ट होता है।
- बेटी-बेटे के विवाह का उल्लेख जाति की मर्यादा के नाम पर बनी वैवाहिक रूढ़ि की ओर संकेत करता है।

चरण 1: पंक्ति का आशय 'काहूकी बेटी सो बेटा न ब्याहब' कहकर तुलसी बताते हैं कि उन्हें किसी से वैवाहिक संबंध नहीं जोड़ना है। इसलिए उनके कारण किसी की जाति बिगड़ने की चिंता निरर्थक है। कथन विवाह में जाति की शुद्धता के आग्रह पर चोट करता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (B) जाति आधारित वैवाहिक प्रथा उस विशेष प्रसंग को ठीक-ठीक बताती है। (A) संपूर्ण जाति व्यवस्था का व्यापक उल्लेख है। (C) पुरुष प्रधान मानसिकता इस पंक्ति का केंद्रीय लक्ष्य नहीं है। (D) विघटनकारी व्यवस्था भी व्यापक तथा

अस्पष्ट है; उसमें विवाह का विशिष्ट संकेत नहीं मिलता।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति के माध्यम से जाति आधारित वैवाहिक प्रथा पर कटाक्ष किया गया है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: बेटी, बेटा और ब्याह जैसे शब्द दिखें तो उत्तर में विवाह संबंधी विशिष्ट सामाजिक रूढ़ि को पहचानिए।

6(iii). तुलसीदास स्वयं को किसका दास मानते हैं ? [1 अंक]

(A) नियमों का

(B) परिस्थितियों का

(C) स्वयं का

(D) राम का

सही उत्तर: (D) राम का

हल:

अवधारणा:

- कवि का आत्मपरिचय उसके आराध्य और आस्था को स्पष्ट करता है।
- 'गुलामु' शब्द यहाँ भक्त का अपने आराध्य के प्रति समर्पण व्यक्त करता है।

चरण 1: पाठ से प्रमाण तुलसी स्पष्ट कहते हैं, 'तुलसी सरनाम गुलामु है राम को'। अर्थात् वे प्रसिद्ध रूप से राम के सेवक हैं। समाज उन्हें कोई भी नाम दे, उनकी मूल पहचान राम के प्रति भक्ति और पूर्ण समर्पण की है। उत्तर इसी स्पष्ट कथन से निर्धारित होता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) नियमों का दास होना पंक्ति में नहीं कहा गया है। (B) परिस्थितियों का दास कहना उनकी निर्लिप्तता के विपरीत होगा। (C) स्वयं का दास होना भी पाठ में नहीं है। (D) राम का दास होना सीधे उद्धृत पंक्ति से प्रमाणित है और उसी में कवि का आत्मपरिचय निहित है।

चरण 3: निष्कर्ष तुलसीदास स्वयं को राम का दास मानते हैं। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: प्रत्यक्ष तथ्य वाले प्रश्न में अनुमान लगाने से पहले उसी तथ्य को स्पष्ट कहने वाली पंक्ति खोजिए।

6(iv). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए :

कथन : परंपरावादी एवं रूढ़िग्रस्त समाज में रहते हुए भी तुलसी निर्विकार जीवन व्यतीत कर रहे थे।

कारण : वे सामाजिक उत्तरदायित्वों से मुक्त थे। [1 अंक]

(A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।

(B) कारण सही है लेकिन कथन गलत है।

(C) कथन सही है लेकिन कारण कथन की गलत व्याख्या करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन-कारण प्रश्न में दोनों की सत्यता के साथ उनके बीच व्याख्यात्मक संबंध भी परखा जाता है।
- सामाजिक उत्तरदायित्वों से मुक्ति का आशय यहाँ विवाह और सांसारिक लेन-देन के बंधनों से मुक्त रहना है।

चरण 1: कथन की जाँच समाज के तानों की उपेक्षा करते हुए तुलसी कहते हैं कि जिसे जो रुचे, वह कहे। इससे रूढ़िग्रस्त समाज में भी उनकी निर्विकार और निर्लिप्त जीवन-दृष्टि स्पष्ट होती है। अत: कथन सही है।

चरण 2: कारण की जाँच बेटे का विवाह न करने और 'लैबोको एकु न दैबको दोऊ' कहने से सांसारिक संबंधों तथा लेन-देन के दायित्वों से उनकी मुक्ति प्रकट होती है। इस प्रसंग में कारण भी सही है; इसे समाज के प्रति संवेदनहीनता नहीं समझना चाहिए।

चरण 3: व्याख्यात्मक संबंध और विकल्प सांसारिक बंधन तथा लेन-देन न होने से सामाजिक दबाव उन्हें विचलित नहीं करते। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (A) और (B) कथन को गलत कहते हैं, इसलिए असंगत हैं। (C) सही व्याख्यात्मक संबंध को नकारता है। केवल (D) दोनों की सत्यता और सही संबंध स्वीकार करता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: कारण में आए सामाजिक दायित्व को कविता के विवाह और लेन-देन वाले संदर्भ में समझकर संबंध जाँचिए।

6(v). 'लैबोको एकु न दैबको दोऊ' – से आशय है – [1 अंक]

(A) न लेना एक न देना दो

(B) किसी से कोई बुरी बात न कहना

(C) किसी से कोई संबंध न रखना

(D) बिना वजह की मुसीबत होना

सही उत्तर: (C) किसी से कोई संबंध न रखना

हल:

अवधारणा:

- मुहावरेदार कथन का अर्थ केवल उसके शब्दों से नहीं, पूरे प्रसंग से निर्धारित होता है।
- लेने-देने से मुक्त रहने की बात सांसारिक संबंधों और उनसे जुड़े बंधनों से विरक्ति को व्यक्त करती है।

चरण 1: कथन का प्रसंगगत आशय 'लैबोको एकु न दैबको दोऊ' में तुलसी कहते हैं कि उनका किसी से लेना-देना नहीं है। वे राम के सेवक होकर माँगकर भोजन और मस्जिद में विश्राम कर सकते हैं। उन्हें सांसारिक लेन-देन और सामाजिक संबंधों के दबाव की चिंता नहीं है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना (C) किसी से कोई संबंध न रखना यहाँ सांसारिक लेन-देन से मुक्त रहने का सबसे उपयुक्त आशय देता है। (A) केवल शब्दों का शाब्दिक दोहराव है। (B) बुरी बात न कहना वाणी के व्यवहार से संबंधित है। (D) बेवजह मुसीबत होना कथन का अर्थ नहीं है; कविता में तो निर्लिप्तता और स्वतंत्रता का भाव है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन का आशय किसी से कोई सांसारिक लेना-देना अथवा संबंध न रखना है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: मुहावरे का शाब्दिक दोहराव छोड़कर उसके आसपास की पंक्तियों से व्यक्त जीवन-दृष्टि पहचानिए।

7(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'आत्मपरिचय' कविता के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक की सार्थकता का आधार कविता की केंद्रीय अनुभूति और कवि के व्यक्तित्व का उद्घाटन है।
- बच्चन का काव्य व्यक्तित्व निजी प्रेम, संवेदना, स्वाभिमान और संसार के साथ द्वंद्वपूर्ण संबंध से बनता है।

चरण 1: आत्मकथन के स्वर को पहचानना कविता में कवि स्वयं अपने मन, प्रेम, जीवन-दृष्टि और दुनिया से संबंध का परिचय देता है। वह सांसारिक दायित्वों का भार अनुभव करता है, किंतु उसके भीतर प्रेम का संसार भी जीवित रहता है। इस प्रकार उसका परिचय केवल बाहरी जीवन या नाम-पते तक सीमित नहीं रहता।

चरण 2: शीर्षक से केंद्रीय भाव का संबंध कवि संसार से जुड़कर भी उसकी रूढ़ मान्यताओं के अनुसार नहीं चलता। उसकी अपनी मस्ती, पीड़ा, आशाएँ और प्रेम के प्रति निष्ठा हैं। इन परस्पर विरोधी लगती अनुभूतियों का मेल उसके संवेदनशील व्यक्तित्व का परिचय देता है। इसलिए शीर्षक कवि के भीतरी स्वरूप के अनावरण को सटीक रूप से व्यक्त करता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर 'आत्मपरिचय' शीर्षक सार्थक है क्योंकि कविता में कवि अपने संवेदनशील, प्रेममय और स्वाभिमानी व्यक्तित्व का परिचय देता है। वह सांसारिक उत्तरदायित्वों से जुड़ा होकर भी अपनी स्वतंत्र जीवन-दृष्टि बनाए रखता है। उसके जीवन में सुख-दुख, आशा-निराशा और मस्ती का समन्वय है। कविता उसके बाहरी परिचय के बजाय उसके अंतर्जगत और संसार के प्रति उसके विशिष्ट संबंध को उजागर करती है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता कवि के अंतर्जगत और जीवन-दृष्टि का परिचय है; इसलिए 'आत्मपरिचय' शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक की सार्थकता लिखते समय कवि के निजी भावों और कविता के केंद्रीय भाव को सीधे जोड़ें।

7(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :
'बात सीधी थी पर' कविता से उद्धृत पंक्ति 'भाषा के चक्कर में जरा टेढ़ी फँस गई' का आशय स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथ्य को सहज और प्रभावी ढंग से व्यक्त करना भाषा का मूल प्रयोजन है।
- अनावश्यक शब्दाडंबर और कृत्रिम चमत्कार सरल विचार को भी उलझा सकते हैं।

चरण 1: पंक्ति के प्रसंग को समझना कवि के पास कहने के लिए एक सीधी-सादी बात थी। वह उसे अधिक प्रभावशाली तथा आकर्षक बनाने के लिए भाषा के साथ प्रयोग करने लगा। उपयुक्त अभिव्यक्ति की तलाश जब अनावश्यक सजावट और बनावटीपन में बदल गई, तो मूल बात की सहजता खोने लगी।

चरण 2: भाषा के चक्कर का आशय यहाँ भाषा के चक्कर से आशय कठिन शब्दों, शब्दाडंबर और अभिव्यक्ति के कृत्रिम दाँव-पेंच में उलझना है। भाषा को कथ्य स्पष्ट करना चाहिए, किंतु कवि का ध्यान भाषा के प्रदर्शन पर अधिक केंद्रित हो गया। फलतः बात पाठक तक सीधे पहुँचने के बजाय जटिल और अस्पष्ट बन गई। कविता सहज भाषा की आवश्यकता रेखांकित करती है। कथ्य के अनुकूल सहज शब्द चुनने पर पाठक अर्थ को बिना बाधा ग्रहण कर सकता है। इसलिए भाषा की सफलता उसके संप्रेषण में है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर इस पंक्ति का आशय है कि कवि की बात मूलतः सरल और स्पष्ट थी, पर उसे विशेष प्रभावशाली बनाने के प्रयास में वह भाषा के अनावश्यक दाँव-पेंच में उलझ गया। शब्दों की सजावट और कृत्रिम चमत्कार ने कथ्य की सहजता नष्ट कर दी। कवि बताता है कि भाषा को भाव का स्वाभाविक माध्यम होना चाहिए; उसका प्रदर्शन बात को जटिल बना देता है।

चरण 4: निष्कर्ष कृत्रिम भाषिक सजावट के कारण सरल कथ्य का उलझ जाना ही पंक्ति का आशय है।

त्वरित सुझाव: व्याख्या में सरल कथ्य, भाषा का अनावश्यक प्रदर्शन और उससे उत्पन्न अस्पष्टता का क्रम स्पष्ट रखें।

7(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'उषा' कविता में कवि ने भोर के नभ की पवित्रता, निर्मलता और उज्ज्वलता को किन रूपों में प्रस्तुत किया है ? स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह भोर के आकाश का चित्र परिचित घरेलू और दृश्य बिंबों के माध्यम से बनाते हैं।
- बिंबों में रंग, प्रकाश और स्वच्छता का बदलता रूप उषाकाल के सौंदर्य को मूर्त करता है।

चरण 1: पवित्रता और निर्मलता के बिंब कवि ने भोर के गहरे नीले आकाश को नीले शंख के समान बताया है। शंख का बिंब पवित्रता का भाव जगाता है। राख से लीपे और अभी गीले चौके का बिंब स्वच्छता, ताजगी तथा निर्मलता का अनुभव कराता है। इन घरेलू और सांस्कृतिक उपमानों से आकाश का सौंदर्य आत्मीय बन जाता है। ये बिंब भोर की शीतल ताजगी भी अनुभव कराते हैं।

चरण 2: लालिमा और उज्ज्वलता के बिंब काली सिल पर लाल केसर धुलने तथा स्लेट पर लाल खड़िया मलने के बिंब आकाश में उभरती लालिमा को दिखाते हैं। नीले जल में झिलमिलाती गौर देह का बिंब प्रकाश की उज्ज्वलता और झिलमिलाहट व्यक्त करता है। सूर्योदय के साथ यह क्रम पूर्ण होता है और उषा का सम्मोहक दृश्य बदल जाता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कवि ने भोर के नभ को नीले शंख जैसा बताकर उसकी पवित्रता व्यक्त की है। राख से लीपा गीला चौका उसकी स्वच्छता और निर्मलता दिखाता है। काली सिल पर धुला लाल केसर तथा स्लेट पर लाल खड़िया आकाश की लालिमा उभारते हैं। नीले जल में झिलमिलाती गौर देह का बिंब उसकी उज्ज्वलता और प्रकाशमय सौंदर्य को साकार करता है।

चरण 4: निष्कर्ष नीला शंख, गीला चौका, केसर, लाल खड़िया और झिलमिलाती गौर देह भोर के नभ के विविध सौंदर्य रूप प्रस्तुत करते हैं।

त्वरित सुझाव: हर बिंब के साथ उसका प्रभाव जोड़ें: शंख से पवित्रता, चौके से स्वच्छता और झिलमिलाहट से उज्ज्वलता।

8(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'सदा पंक पर ही होता, जल विप्लव प्लावन' – पंक्ति में प्रयुक्त 'पंक' और 'विप्लव' शब्द की प्रतीकात्मकता स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक के माध्यम से प्राकृतिक दृश्य में सामाजिक अर्थ व्यक्त किया जाता है।
- निराला के बादल शोषित जनजीवन की मुक्ति और सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा से जुड़े हैं।

चरण 1: पंक का सामाजिक संकेत पंक का शाब्दिक अर्थ कीचड़ है, जो धरती की निचली सतह पर रहता है। कविता के सामाजिक संदर्भ में यह दीन, निर्धन, उपेक्षित और शोषित जनसमुदाय का प्रतीक है। समाज के इसी वर्ग पर व्यवस्था का बोझ पड़ता है और परिवर्तन की आवश्यकता सबसे अधिक इसी के जीवन में होती है।

चरण 2: विप्लव का सामाजिक संकेत विप्लव का अर्थ क्रांति अथवा व्यापक परिवर्तन है। जल के उथल-पुथल भरे प्रवाह की तरह क्रांति जड़ सामाजिक व्यवस्था को झकझोरती है। पंक्ति यह संकेत करती है कि क्रांति का संबंध शोषितों के जीवन से है; परिवर्तन की चेतना और शक्ति उन्हीं जनसमूहों में जन्म लेती है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर 'पंक' दीन, निर्धन, उपेक्षित और शोषित जनता का प्रतीक है। 'विप्लव' सामाजिक क्रांति तथा जड़ व्यवस्था के परिवर्तन का प्रतीक है। पंक्ति का संकेत है कि क्रांति की चेतना शोषित जनसमुदाय में जन्म लेती है और उसके जीवन को बदलती है।

चरण 4: निष्कर्ष 'पंक' शोषित जनसमुदाय और 'विप्लव' सामाजिक क्रांति का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: प्रतीकात्मकता में शब्दार्थ बताने के बाद उसका सामाजिक संकेत अवश्य लिखें; केवल कीचड़ और बाढ़ लिखना अधूरा होगा।

8(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में 'यह अवसर खो देंगे' – पंक्ति में कौन से अवसर को खोने की बात कही जा रही है ? इससे मीडियाकर्मी के किस व्यवहार का पता लगता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता में दूरदर्शन के साक्षात्कार के माध्यम से करुणा को मनोरंजन और प्रदर्शन की सामग्री बनाने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य है।
- पंक्ति का अर्थ समझने के लिए मीडियाकर्मी के उद्देश्य तथा अपाहिज व्यक्ति के दुःख के प्रति उसके व्यवहार को साथ रखकर देखना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग और अवसर की पहचान मीडियाकर्मी अपाहिज व्यक्ति से उसकी पीड़ा के बारे में बार-बार प्रश्न करके उसे रुलाना चाहता है। उसके रोने और चेहरे पर उभरते दुःख को कैमरे में दिखाकर कार्यक्रम को मार्मिक तथा प्रभावशाली बनाया जा सकता है। यहाँ अवसर का संबंध उसी दृश्य को प्राप्त करने से है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर यह अपाहिज की पीड़ा उभारकर उसे रुलाने और उसके आँसू कैमरे में दिखाने का अवसर है। मीडियाकर्मी इसे खोना नहीं चाहता। इससे उसका संवेदनहीन, स्वार्थी और व्यावसायिक व्यवहार प्रकट होता है; वह मानवीय दुःख को कार्यक्रम की सफलता का साधन बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति पीड़ित की सहायता के बजाय उसके दुःख के प्रदर्शन का अवसर बचाने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य करती है।

त्वरित सुझाव: अवसर का अर्थ लिखते समय आँसू कैमरे में दिखाना और मीडियाकर्मी की संवेदनहीनता, दोनों अवश्य जोड़ें।

8(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'पतंग' कविता से उद्धृत पंक्ति - 'डाल की तरह लचीले वेग से' का आशय स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलोक धन्वा की कविता में पतंग उड़ाते बच्चों की उमंग, गति और शरीर की सहज लचक का चित्रण है।
- डाल का उपमान गति के साथ लचीलेपन और संतुलन को समझाता है; इसे केवल तेज दौड़ने तक सीमित नहीं करना चाहिए।

चरण 1: उपमान का आशय समझें डाल हवा के वेग में झुकती और लहराती है, पर उसमें लचक बनी रहती है। उसी तरह पतंग उड़ाते बच्चों के शरीर में फुर्ती और लचक है। कवि इस तुलना से बच्चों के शरीर की जीवंत गतिशीलता का दृश्य बिंब बनाता है। उनकी उत्साहपूर्ण हलचल में तन के झुकने, मुड़ने तथा फिर सहज होने की गतिशीलता दिखाई देती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर इस पंक्ति में पतंग उड़ाते बच्चों की फुर्तीली, लचकभरी गति का चित्र है। जैसे डाल हवा में लहराकर झुकती और सँभलती है, वैसे ही बच्चे उत्साह में दौड़ते, झुकते और तन को मोड़ते हैं। यह उपमान उनकी सजीवता, सहज संतुलन और उमंग व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष डाल का उपमान बच्चों की गति में लचक, फुर्ती और सहज संतुलन को मूर्त करता है।

त्वरित सुझाव: आशय में केवल वेग न लिखें; डाल की लचक को बच्चों की शारीरिक गति और उमंग से जोड़ें।

9. भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं। वह सत्यवादी हरिश्चंद्र नहीं बन सकती; पर 'नरो वा कुंजरो वा' कहने में भी विश्वास नहीं करती। मेरे इधर-उधर पड़े पैसे-रुपये, भंडार-घर की किसी मटकी में कैसे अंतरहित हो जाते हैं, यह रहस्य भी भक्तिन जानती है। पर, उस संबंध में किसी के संकेत करते ही वह उसे शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दे डालती है, जिसको स्वीकार कर लेना किसी तर्क-शिरोमणि के लिए संभव नहीं। यह उसका अपना घर ठहरा, पैसा-रुपया जो इधर-उधर पड़ा देखा, सँभालकर रख लिया। यह क्या चोरी है ! उसके जीवन का परम कर्तव्य मुझे प्रसन्न रखना है – जिस बात से मुझे क्रोध आ सकता है, उसे बदलकर इधर-उधर करके बताना, क्या झूठ है। इतनी चोरी और इतना झूठ तो धर्मराज महाराज में भी होगा, नहीं तो भगवान जी कैसे प्रसन्न रख सकते और संसार को कैसे चला सकते ! [5 अंक]

9(i). गद्यांश में 'नरो वा कुंजरो वा' का उल्लेख किस संदर्भ में किया गया है ? [1 अंक]

(A) महाभारत के प्रसंग से अवगत कराने के लिए

(B) भक्तिन को युधिष्ठिर के समकक्ष रखने के लिए

(C) भक्तिन की चारित्रिक विशेषता स्पष्ट करने के लिए

(D) भक्तिन को युधिष्ठिर से श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए

सही उत्तर: (C) भक्तिन की चारित्रिक विशेषता स्पष्ट करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में आए संकेत का उद्देश्य पात्र के स्वभाव से जोड़कर समझना चाहिए।
- हरिश्चंद्र और नरो वा कुंजरो वा के उल्लेख भक्तिन के सत्य तथा कथन-व्यवहार की विशेषता बताते हैं।

चरण 1: निर्णायक संदर्भ देखें लेखिका बताती हैं कि भक्तिन पूर्ण सत्यवादी नहीं है, लेकिन नरो वा कुंजरो वा जैसी दुविधापूर्ण बात कहने में भी विश्वास नहीं करती। यह टिप्पणी उसके स्वभाव का परिचय देती है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (C) इस चरित्रगत विशेषता को व्यक्त करता है। (A) गलत है, क्योंकि उद्देश्य महाभारत का प्रसंग सुनाना नहीं है। (B) में समकक्षता और (D) में श्रेष्ठता सिद्ध करने का दावा है; गद्यांश में इनमें से कोई उद्देश्य नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन की चारित्रिक विशेषता स्पष्ट करने के लिए यह उल्लेख हुआ है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पौराणिक संकेत का उत्तर उसके स्थानीय संदर्भ से तय करें; यहाँ केंद्र भक्तिन का स्वभाव है।

9(ii). भक्तिन घर में पड़े पैसों को मटकी में छिपाकर किस उद्देश्य से रखती थी ? [1 अंक]

(A) पैसों को सँभालकर रखने

(B) अन्य सेवकों की दृष्टि से बचाने

(C) आपातकाल में काम आने

(D) स्वयं को दूसरे से श्रेष्ठ समझने

सही उत्तर: (A) पैसों को सँभालकर रखने

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में पात्र द्वारा अपने कार्य के लिए दिए गए तर्क से उसका बताया उद्देश्य पहचाना जाता है।
- पैसे सँभालकर रखने का स्पष्ट उल्लेख अनुमान पर आधारित अन्य उद्देश्यों से अधिक निर्णायक है।

चरण 1: प्रत्यक्ष प्रमाण खोजें भक्तिन का तर्क है कि यह उसका अपना घर है और इधर-उधर पड़े पैसे देखकर उसने उन्हें सँभालकर रख लिया। वह इसी आधार पर अपने काम को चोरी मानने से इनकार करती है।

चरण 2: अन्य विकल्प हटाएँ (A) गद्यांश के सँभालकर रख लिया से सीधे मेल खाता है। (B) अन्य सेवकों से बचाना और (C)

आपातकाल में उपयोग करना पाठ में नहीं हैं। (D) दूसरों से श्रेष्ठ समझने का भी इस प्रसंग से कोई प्रमाण नहीं मिलता।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन पैसे सँभालकर रखने के उद्देश्य से मटकी में रखती थी। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पात्र का उद्देश्य पूछे जाने पर उसी के बताए कारण को देखें; पाठ में अनुपस्थित उद्देश्य न जोड़ें।

9(iii). 'थोड़ा बहुत झूठ बोलना' के समर्थन में भक्तिन अपना आदर्श किसे मानती थी ? [1 अंक]

(A) हरिश्चंद्र

(B) यमराज

(C) युधिष्ठिर

(D) महादेवी

सही उत्तर: (B) यमराज

हल:

अवधारणा:

- इस प्रश्न में भक्तिन द्वारा अपने व्यवहार के समर्थन में दिए गए देवता के उदाहरण को पहचानना है।
- भगवान को प्रसन्न रखने और संसार चलाने के संदर्भ में धर्मराज महाराज से आशय यमराज है।

चरण 1: भक्तिन का तर्क पहचानें भक्तिन अपने थोड़ा झूठ बोलने का समर्थन करती हुई कहती है कि इतना झूठ तो धर्मराज महाराज में भी होगा, अन्यथा वे भगवान को प्रसन्न रखकर संसार कैसे चला सकते। संसार के संचालन से जुड़ा यह दैवी उदाहरण यमराज का है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (B) यमराज इस प्रसंग का उपयुक्त उत्तर है। (A) हरिश्चंद्र सत्यवादी थे। (C) युधिष्ठिर का संकेत पहले नरो वा कुंजरो वा में है, लेकिन वह लेखिका की अलग टिप्पणी है; यहाँ भक्तिन संसार चलाने वाले देवता का उदाहरण देती है। (D) महादेवी को प्रसन्न रखना भक्तिन का उद्देश्य है, वे उसका यह आदर्श नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष थोड़ा बहुत झूठ बोलने के समर्थन में भक्तिन यमराज को आदर्श मानती थी। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: धर्मराज का अर्थ तय करते समय इसी वाक्य के भगवान को प्रसन्न रखने और संसार चलाने के संदर्भ को देखें।

9(iv). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन : भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा।

कारण : समय और परिस्थिति के अनुसार मूल तथ्यों में जोड़-घटाव करती थी। [1 अंक]

(A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।

(B) कारण सही है किंतु कथन गलत है।

(C) कथन सही है किंतु कारण कथन की गलत व्याख्या करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण में पहले दोनों की सत्यता, फिर उनका व्याख्यात्मक संबंध जाँचना चाहिए।
- भक्तिन के दुर्गुण और तथ्यों को बदलकर बताने की प्रवृत्ति लेखिका के मूल्यांकन को समझाते हैं।

चरण 1: कथन की सत्यता गद्यांश का आरंभ ही भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा से होता है। लेखिका स्पष्ट करती हैं कि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं है। अतः कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता भक्तिन लेखिका को क्रोध से बचाने के लिए बात बदलकर और इधर-उधर करके बताती थी। इस प्रकार वह परिस्थिति के अनुसार मूल बात में परिवर्तन करती थी। कारण भी सही है।

चरण 3: व्याख्या और विकल्प तथ्यों को बदलना उसके पूर्ण सत्यवादी न होने का प्रमाण है और उसे निर्विवाद रूप से अच्छा कहने में कठिनाई का कारण बनता है। अतः दोनों सही हैं और कारण सही व्याख्या करता है। (A), (B) सत्यता तथा (C) संबंध को गलत बताते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: कथन-कारण में दोनों सही पाकर न रुकें; देखें कि कारण कथन का आधार भी बनता है या नहीं।

9(v). महादेवी जी के क्रोध से बचने के लिए भक्तिन क्या करती थी ? [1 अंक]

(A) खूब मन लगाकर काम करती थी
(B) बातों को ढालकर बताती थी
(C) उनके सामने नहीं आती थी
(D) बातों को स्पष्ट रूप से बताती थी

सही उत्तर: (B) बातों को ढालकर बताती थी

हल:

अवधारणा:

- पात्र के व्यवहार का उत्तर गद्यांश के प्रत्यक्ष कथन से चुना जाना चाहिए।
- बात बदलकर बताने और स्पष्ट तथ्य बताने में अंतर पहचानना इस प्रश्न का आधार है।

चरण 1: पाठ का प्रमाण देखें लेखिका कहती हैं कि जिस बात से उन्हें क्रोध आ सकता है, भक्तिन उसे बदलकर इधर-उधर करके बताती है। उसका लक्ष्य लेखिका को प्रसन्न रखना और उनके क्रोध से बचना है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना (B) बातों को ढालकर बताती थी इसी व्यवहार का अर्थ व्यक्त करता है। (A) मन लगाकर काम करना और (C) सामने न आना इस प्रश्न के संदर्भ में नहीं बताए गए हैं। (D) स्पष्ट रूप से बताना तथ्य बदलकर बताने के विपरीत है।

चरण 3: निष्कर्ष महादेवी जी के क्रोध से बचने के लिए भक्तिन बातों को ढालकर बताती थी। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: उत्तर चुनते समय बदलकर इधर-उधर करके बताना को अपने शब्दों में बातों को ढालकर बताना से मिलाएँ।

10(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :
वैश्वीकरण के इस दौर में क्या भगत जी का चरित्र बाज़ार को सार्थकता और समाज में शांति स्थापित कर सकता है ? 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भगत जी का संतोष बाज़ार की चकाचौंध और अनावश्यक संग्रह की प्रवृत्ति का प्रतिरोध करता है।
- बाज़ार की सार्थकता आवश्यकताओं की पूर्ति तथा विक्रेता और ग्राहक के मानवीय संबंधों में है।

चरण 1: चरित्र का पाठगत आधार भगत जी चूरन बेचकर प्रतिदिन केवल अपनी आवश्यकता भर कमाते हैं। छह आने की आय हो जाने

पर वे शेष चूरन बच्चों में बाँट देते हैं। अधिक लाभ का अवसर मिलने पर भी वे लोभ में नहीं पड़ते। यह व्यवहार बताता है कि उनके लिए धन साधन है, जीवन का अंतिम उद्देश्य नहीं। उनका आचरण ग्राहक के प्रति आत्मीयता भी दिखाता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर हाँ, भगत जी का संतोषी और निर्लोभी चरित्र आज भी उपयोगी है। आवश्यकता भर कमाकर शेष चूरन बच्चों को बाँटना उनके उदार स्वभाव का प्रमाण है। ऐसी वृत्ति अनावश्यक खरीद, लोभ और प्रतिस्पर्धा घटाकर बाज़ार को उपयोगी तथा समाज को शांत बना सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष भगत जी का संयम, संतोष और परोपकार बाज़ार को मानवीय बनाकर सामाजिक शांति में योगदान दे सकते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में छह आने की सीमित कमाई और शेष चूरन बाँटने के प्रसंग को वर्तमान उपभोक्तावाद से जोड़िए।

10(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'शिरीष के फूल' पाठ में कबीर को शिरीष की भाँति क्यों बताया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष की कोमलता उसकी प्रतिकूल परिस्थितियों में अविचल रहने की शक्ति के साथ जुड़ी है।
- कबीर की मस्ती और अनासक्ति बाहरी बाधाओं के बीच उनकी आंतरिक स्वतंत्रता को प्रकट करती हैं।

चरण 1: तुलना का आधार पहचानना शिरीष भीषण गर्मी में भी खिलता और सरस बना रहता है। लेखक उसकी इस क्षमता में अनासक्त साधक की शक्ति देखते हैं। कबीर भी सामाजिक रूढ़ियों और विरोध के बीच निर्भीक बने रहे। उनके स्वभाव की मस्ती परिस्थितियों से पराजित नहीं होती; उनकी फक्कड़ता भीतर की दृढ़ता का परिचय देती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कबीर शिरीष की भाँति मस्त, फक्कड़ और अनासक्त थे। जैसे शिरीष भीषण गर्मी में भी कोमल फूल खिलाता है, वैसे ही कबीर प्रतिकूल सामाजिक परिस्थितियों से विचलित हुए बिना निर्भीक बने रहे। दोनों बाहरी कठिनाइयों के बीच अपनी सहजता और सरसता बनाए रखते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कबीर और शिरीष में प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच मस्ती, अनासक्ति और सहजता बनाए रखने की समानता है।

त्वरित सुझाव: तुलना में पहले शिरीष की गर्मी में खिलने की विशेषता लिखिए, फिर उसे कबीर की निर्भीक मस्ती से जोड़िए।

10(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' पाठ से उद्धृत कथन 'दासता केवल कानूनी पराधीनता ही नहीं है' – का आशय स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दासता का अर्थ केवल किसी कानून के अधीन गुलाम होना नहीं, बल्कि जीवन के निर्णयों में स्वतंत्रता का अभाव भी है।
- जाति के आधार पर थोपा गया पेशा व्यक्ति की रुचि, योग्यता और कार्य चुनने की स्वतंत्रता को बाधित करता है।

चरण 1: कथन का सामाजिक संदर्भ आंबेडकर के अनुसार ऐसी सामाजिक व्यवस्था भी दासता है जिसमें कुछ लोग दूसरों को निर्धारित आचरण अपनाने के लिए बाध्य कर सकें। जाति-प्रथा जन्म के आधार पर व्यवसाय तय करके व्यक्ति की अपनी क्षमता और रुचि को गौण बना देती है। इस प्रकार कानूनन स्वतंत्र व्यक्ति भी सामाजिक दबाव के कारण पराधीन रह सकता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर दासता केवल कानून द्वारा गुलाम बनाए जाने तक सीमित नहीं है। जब समाज व्यक्ति को अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार व्यवसाय चुनने न दे तथा दूसरों द्वारा निर्धारित काम करने को विवश करे, तब ऐसी सामाजिक विवशता भी दासता का रूप है।

चरण 3: निष्कर्ष स्वतंत्र चुनाव को रोकने वाली सामाजिक बाध्यता भी दासता है; केवल कानूनी स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं है।

त्वरित सुझाव: कथन का आशय बताते समय जन्म से थोपे गए व्यवसाय और व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता का संबंध स्पष्ट कीजिए।

11(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए' - 'बाजार दर्शन' पाठ में यह वाक्य क्यों और किस संदर्भ में कहा गया ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का आकर्षण इच्छाओं को भड़काता है; अपनी वास्तविक आवश्यकता की स्पष्टता उससे बचने का उपाय है।
- लू और पानी का उदाहरण क्रमशः बाज़ार की चकाचौंध तथा मन की संतुष्टि और संयम को समझाने के लिए दिया गया है।

चरण 1: उदाहरण का प्रत्यक्ष और प्रतीकात्मक अर्थ गर्मी की लू में निकलने से पहले पानी पीना शरीर की रक्षा करता है। इसी सामान्य अनुभव के सहारे लेखक बाज़ार जाने की मानसिक तैयारी समझाते हैं। जिस प्रकार पानी पीकर निकलने वाला व्यक्ति लू से बचने का उपाय करता है, उसी प्रकार अपनी जरूरत जानकर जाने वाला व्यक्ति बाज़ार के आकर्षण के प्रति सजग रहता है। यहाँ मन भरा होने का अर्थ विवेक और संतोष है।

चरण 2: पाठ का संदर्भ और उद्देश्य लेखक समझाते हैं कि मन खाली हो तो बाज़ार की बहुत-सी वस्तुएँ जरूरी लगने लगती हैं। व्यक्ति आकर्षण में आकर गैरजरूरी सामान खरीद सकता है और बाद में पछता सकता है। इसलिए यह उदाहरण उपभोक्ता को पहले अपनी आवश्यकता स्पष्ट करने और इच्छा पर नियंत्रण रखने की सीख देता है। बाज़ार का लाभ तभी है जब वह हमारी जरूरत पूरी करे।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर यह वाक्य बाज़ार के आकर्षण से बचने का उपाय समझाते हुए कहा गया है। जैसे लू में पानी पीकर जाना शरीर को बचाता है, वैसे ही अपनी जरूरत समझकर और मन को संतुष्ट रखकर बाज़ार जाना उसके जादू से बचाता है। खाली मन अनावश्यक वस्तुओं को भी जरूरी मान लेता है; इसलिए लेखक संयम और आवश्यकताओं की स्पष्टता पर बल देते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक ने लू और पानी का उदाहरण देकर बाज़ार जाने से पहले मन में संतोष और वास्तविक आवश्यकताओं की स्पष्टता रखने की सीख दी है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में क्यों और किस संदर्भ में दोनों माँगें पूरी करें; लू से बचाव को बाज़ार के आकर्षण से बचाव से जोड़ें।

11(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :

अनावृष्टि दूर करने के लिए गाँव के बच्चों और गाँव वालों द्वारा किए गए उपायों को आप कितना उचित मानते हैं ? 'काले मेघा पानी दे' पाठ के संदर्भ में तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धर्मवीर भारती का संस्मरण वर्षा से जुड़ी लोकपरंपरा, लोकविश्वास और तार्किक दृष्टि के बीच संवाद प्रस्तुत करता है।
- किसी परंपरा का मूल्यांकन करते समय उसके वैज्ञानिक आधार और सामाजिक संदेश को अलग-अलग परखना चाहिए।

चरण 1: वर्षा के लिए किए गए उपाय और उनका आधार गाँव के लड़के इंदर सेना बनाकर घरों से पानी माँगते और वर्षा के लिए पुकार लगाते हैं। गाँव वाले उन पर पानी डालते हैं। पानी की कमी के समय पानी बहाना लेखक को अनुचित लगता है। जीजी इसे इंद्र को जल का अर्घ्य देना मानती हैं और समझाती हैं कि कुछ पाने के लिए पहले देना पड़ता है। इससे परंपरा के पीछे त्याग और उदारता की भावना उभरती है।

चरण 2: विवेकपूर्ण मूल्यांकन पानी डालने से वर्षा होने का वैज्ञानिक कारण सिद्ध नहीं होता। इसलिए सूखे का व्यावहारिक समाधान

मानकर इस उपाय का समर्थन नहीं किया जा सकता। फिर भी बच्चों की सामूहिक सक्रियता, संकट में आशा बनाए रखना और देने की भावना उपयोगी हैं। उत्तर में दोनों पक्ष रखकर जल-संरक्षण तथा साझा प्रयासों की आवश्यकता बताना उचित है। लोकजीवन का सम्मान विवेक को छोड़ देने का कारण नहीं होना चाहिए।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर इंदर सेना के बच्चों का घर-घर पानी माँगना और गाँव वालों का उन पर पानी डालना वर्षा का वैज्ञानिक उपाय नहीं है। सूखे में जल बहाना अनुचित लगता है। फिर भी जीजी की व्याख्या में त्याग, दान और सामूहिक आशा का संदेश है। अतः लोकविश्वास की सद्भावना स्वीकारते हुए जल-संरक्षण और सूखे से निपटने के व्यावहारिक सामूहिक उपाय अपनाने चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष इन उपायों की सामाजिक सद्भावना उचित है, किंतु अनावृष्टि दूर करने के लिए उनका वैज्ञानिक विकल्पों और जल-संरक्षण का स्थान लेना उचित नहीं है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले इंदर सेना का उपाय लिखें, फिर उसकी वैज्ञानिक सीमा और जीजी की त्याग-संबंधी भावना का संतुलित मूल्यांकन करें।

11(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :

शिरीष के माध्यम से लेखक ने, 'कालजयी अवधूत की भाँति विपरीत परिस्थितियों में भी अविचल खड़े रहने की प्रेरणा दी है।' पुष्टि कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हजारीप्रसाद द्विवेदी शिरीष के माध्यम से प्रतिकूल समय में जीवन की सरसता, अनासक्ति और आंतरिक दृढ़ता बनाए रखने की प्रेरणा देते हैं।
- अवधूत का भाव बाहरी परिस्थितियों से विचलित हुए बिना सहज, निर्लिप्त और मस्त बने रहने से जुड़ा है।

चरण 1: विपरीत वातावरण में शिरीष का व्यवहार भीषण गर्मी और लू में जब आसपास का वातावरण झुलसता है, तब भी शिरीष फूलों से भरा रहता है। उसके कोमल फूल कठोर वातावरण के सामने जीवन की सरसता का परिचय देते हैं। लेखक इसी गुण में ऐसी भीतरी शक्ति देखता है जो बाहरी ताप के कारण नष्ट नहीं होती। शिरीष का खिला रहना उसकी जिजीविषा और सहज मस्ती का प्रमाण है।

चरण 2: अवधूत से तुलना का आशय कालजयी अवधूत बाहरी सुख-दुःख से ऊपर उठकर अपनी आंतरिक स्वतंत्रता बनाए रखता है। शिरीष भी वातावरण की कठोरता से अपना स्वभाव नहीं खोता। यहाँ अविचलता का अर्थ जड़ होकर खड़े रहना नहीं, बल्कि परिस्थितियों के बीच जीवन की ऊर्जा और उदारता बचाए रखना है। मनुष्य को भी संकट में निराशा अथवा कटुता अपनाने के स्थान पर धैर्य और सृजनशीलता बनाए रखनी चाहिए।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर भीषण गर्मी और लू में भी शिरीष कोमल फूलों से लदा रहता है। प्रतिकूल वातावरण उसकी मस्ती और सरसता नहीं छीन पाता। इसी अनासक्त स्वभाव के कारण लेखक उसे कालजयी अवधूत जैसा मानता है। वह सिखाता है कि मनुष्य विपत्तियों से विचलित होकर जीवन का उल्लास न खोए, बल्कि धैर्य, आंतरिक दृढ़ता और सहजता बनाए रखे।

चरण 4: निष्कर्ष शिरीष की विपरीत मौसम में बनी रहने वाली सरसता अवधूत की अनासक्ति जैसी है; उससे संकट में धैर्य और जीवन का उल्लास बनाए रखने की प्रेरणा मिलती है।

त्वरित सुझाव: शिरीष के कोमल फूलों और कठोर ग्रीष्म का विरोध दिखाकर उसे अवधूत की अनासक्ति तथा मानव-जीवन की प्रेरणा से जोड़ें।

12(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 100 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'सिल्वर वैडिंग' कहानी में यशोधर बाबू और उनके बच्चों के बीच वैचारिक मतभेद दिखाया गया है। इस प्रकार का मतभेद आपको भी अपने घर और आस-पड़ोस में दिखाई देता होगा। इस मतभेद के क्या कारण हैं, इन्हें कैसे कम किया जा सकता है ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी में यशोधर बाबू का परंपरागत जीवनबोध और बच्चों की आधुनिक जीवनशैली पीढ़ियों के वैचारिक अंतर को सामने लाते हैं।
- प्रश्न में कहानी के प्रसंग को दैनिक पारिवारिक अनुभव से जोड़कर मतभेद के कारण और समाधान तर्क सहित प्रस्तुत करने हैं।

चरण 1: कहानी में पीढ़ियों का वैचारिक अंतर यशोधर बाबू के विचारों पर किशन दा का गहरा प्रभाव है। वे सादगी, पुराने संस्कारों और सामुदायिक संबंधों को महत्त्व देते हैं। बच्चे आधुनिक रहन-सहन, आर्थिक प्रगति और नए ढंग के उत्सवों के प्रति आकर्षित हैं। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का आयोजन भी यशोधर बाबू को सहज नहीं लगता। बच्चों की दृष्टि में उत्सव सामान्य है, जबकि पिता के अनुभव और संस्कार उन्हें उससे दूरी का अनुभव कराते हैं।

चरण 2: मतभेद के सामाजिक कारण अलग समय में पली पीढ़ियों की आवश्यकताएँ और सफलता के मानदंड अलग होते हैं। शिक्षा, नौकरी, तकनीक और उपभोक्ता संस्कृति से बच्चों की आकांक्षाएँ बदलती हैं। बड़े अपने अनुभवों को सुरक्षित आधार मानते हैं, जबकि बच्चे स्वतंत्र निर्णय चाहते हैं। जब दोनों अपने दृष्टिकोण को ही सही मानते हैं और दूसरे की परिस्थितियाँ नहीं समझते, तब साधारण अंतर टकराव बन जाता है। घरों में पहनावे, खर्च, उत्सव और जीवन-निर्णयों को लेकर ऐसे अंतर दिखाई दे सकते हैं।

चरण 3: संबंध सुधारने के व्यावहारिक उपाय परिवार में निर्णय बातचीत से लिए जाएँ। बच्चे बड़ों के अनुभव और सम्मान की आवश्यकता समझें; बड़े भी नई पीढ़ी की स्वतंत्रता तथा बदली सामाजिक परिस्थितियों को स्वीकारें। किसी समारोह या खर्च की योजना बनाते समय सबकी पसंद और सुविधा पूछना उपयोगी है। स्नेह को अपनी पसंद थोपने के रूप में व्यक्त करने के बजाय दूसरे की बात सुनना चाहिए। इस प्रकार संवाद, सहिष्णुता और सहभागिता मतभेद को संबंध-विच्छेद बनने से रोकते हैं।

चरण 4: लगभग 100 शब्दों में उत्तर 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर बाबू सादगी और पुराने संस्कारों से जुड़े हैं, जबकि बच्चे आधुनिक रहन-सहन तथा उत्सवप्रियता अपनाते हैं। विवाह-वर्षगाँठ का आयोजन इस अंतर को उभारता है। परिवारों में ऐसे मतभेद बदलती शिक्षा, आर्थिक स्थिति, तकनीक, उपभोक्तावाद और स्वतंत्रता की आकांक्षा से पैदा होते हैं। बड़े अपने अनुभव को अंतिम सत्य मान लेते हैं और बच्चे पुराने मूल्यों को अनावश्यक समझते हैं। इन्हें कम करने के लिए दोनों पीढ़ियों को संवाद करना चाहिए। बच्चों को बड़ों के अनुभव और भावनाओं का सम्मान करना चाहिए; बड़ों को नए विचार स्वीकारने चाहिए। साझा निर्णय, धैर्य और पारस्परिक विश्वास संबंधों को सहज बना सकते हैं।

चरण 5: निष्कर्ष पीढ़ियों के अनुभवों और जीवन-मूल्यों का अंतर स्वाभाविक है; सम्मानपूर्ण संवाद, बदलते समय की समझ और साझा निर्णय उसे पारिवारिक टकराव बनने से रोक सकते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले यशोधर बाबू और बच्चों के अंतर का एक प्रसंग दें, फिर कारणों को संवाद तथा साझा निर्णय जैसे ठोस उपायों से जोड़ें।

12(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 100 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'जूझ' कहानी के आधार पर सिद्ध कीजिए कि प्रोत्साहन के शब्द व्यक्ति के जीवन की दशा और दिशा को बदलने में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की आत्मकथात्मक रचना में शिक्षा के लिए संघर्ष और शिक्षक के प्रोत्साहन से प्रतिभा के विकास का संबंध स्पष्ट होता है।

- कथन सिद्ध करने के लिए सहायता देने वाले व्यक्ति, उसकी प्रेरणा और लेखक के जीवन पर पड़े परिणाम को जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: शिक्षा की बाधा और सहायता समझें लेखक पढ़ना चाहता था, किंतु पिता उसे खेत के काम में लगाए रखना चाहते थे। इसलिए उसकी समस्या केवल पढ़ाई में रुचि पैदा करना नहीं, बल्कि विद्यालय जाने का अवसर प्राप्त करना भी थी। दत्ता जी राव की सहायता से पिता पर प्रभाव पड़ा और पढ़ाई का बंद रास्ता खुला। इस प्रसंग से स्पष्ट होता है कि किसी समर्थ व्यक्ति का सहयोग संघर्षरत विद्यार्थी को आगे बढ़ने का आधार देता है।

चरण 2: अध्यापक के प्रोत्साहन का प्रभाव समझें सौंदलगेकर मास्टर कविता को भाव और लय के साथ पढ़ाते थे। उनके अध्यापन से लेखक कविता के प्रति आकर्षित हुआ। लेखक की कविता सुनकर उन्होंने उसे प्रोत्साहित किया तथा रचना और उच्चारण के विषय में मार्गदर्शन दिया। इससे लेखक की झिझक घटी, आत्मविश्वास बढ़ा और कविता रचने की क्षमता विकसित हुई। प्रोत्साहन ने उसकी पहले से मौजूद रुचि को निरंतर साधना की दिशा दी।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर 'जूझ' में आनंद की पढ़ने की इच्छा को पिता का विरोध रोकता है। दत्ता जी राव की सहायता से उसे फिर विद्यालय जाने का अवसर मिलता है। आगे सौंदलगेकर मास्टर का सजीव काव्यपाठ उसकी साहित्यिक रुचि जगाता है। वे उसकी कविताएँ सुनकर प्रोत्साहित करते हैं और रचना का मार्गदर्शन देते हैं। इससे उसका संकोच दूर होता है तथा अपनी प्रतिभा पर विश्वास बढ़ता है। खेतों में काम करते हुए भी वह कविता रचने लगता है। इस प्रकार सहयोग और प्रेरक शब्द उसके जीवन को श्रम की विवशता से शिक्षा तथा सृजन की ओर मोड़ते हैं। प्रोत्साहन उसकी संघर्षशक्ति और रचनात्मक पहचान के विकास का आधार बनता है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार दत्ता जी राव के सहयोग और सौंदलगेकर मास्टर की प्रेरणा ने आनंद की शिक्षा, आत्मविश्वास और काव्यप्रतिभा को विकसित करके उसके जीवन की दशा तथा दिशा बदली।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल प्रोत्साहन की प्रशंसा न करें; दत्ता जी राव और सौंदलगेकर मास्टर के सहयोग को उनके ठोस परिणामों से जोड़ें।

12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 100 शब्दों में उत्तर दीजिए :
'सिंधु घाटी सभ्यता मूलत: खेतिहर और पशुपालन सभ्यता थी।' उदाहरण सहित सिद्ध कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'अतीत में दबे पाँव' में पुरातात्त्विक अवशेषों के सहारे सिंधु सभ्यता के जीवन और संस्कृति का परिचय मिलता है।
- कृषि और पशुपालन को मूल आधार सिद्ध करने के लिए अन्न, भंडारण, वस्त्र तथा पशु-अंकनों जैसे प्रमाणों को आजीविका से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: खेती के प्रमाण प्रस्तुत करें सिंधु सभ्यता में गेहूँ, जौ और कपास की खेती के प्रमाण मिलते हैं। अनाज उत्पादन और उसके संग्रह से जुड़े विशाल अन्नागार बताते हैं कि खेती लोगों की भोजन-व्यवस्था और अर्थव्यवस्था का महत्त्वपूर्ण आधार थी। कपास उगाना और उससे वस्त्र बनाना भी कृषि तथा विकसित उत्पादन-कौशल के संबंध को स्पष्ट करता है। केवल नगरों और पक्के भवनों की उपस्थिति देखकर इस सभ्यता के कृषि-आधार को भूलना उचित नहीं होगा।

चरण 2: पशुपालन और कृषि का संबंध स्पष्ट करें मुहरों और अन्य अवशेषों पर बैलों आदि पशुओं के अंकन इस समाज में पशुओं के महत्त्व की पहचान कराते हैं। बैल खेती और भार ढोने में सहायक रहे होंगे; गाय-भैंस जैसे पालतू पशु दूध और अन्य आवश्यकताओं से जुड़े थे। कृषि तथा पशुपालन एक-दूसरे के पूरक थे। नगरों का शिल्प और व्यापार भी ग्रामीण उपज तथा पशु-संपदा से मिलने वाले संसाधनों के सहारे विकसित हो सकता था।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर सिंधु घाटी सभ्यता के समृद्ध नगरों की बुनियाद कृषि और पशुपालन पर टिकी थी। वहाँ गेहूँ, जौ और कपास की खेती के प्रमाण मिले हैं। विशाल अन्नागार अनाज के उत्पादन तथा व्यवस्थित भंडारण का संकेत देते हैं। कपास से वस्त्र बनाना भी खेती के महत्त्व को स्पष्ट करता है। मुहरों पर बैलों आदि पशुओं के अंकन पशु-संपदा के प्रति लोगों की परिचितता दर्शाते हैं। गाय, बैल और भैंस जैसे पशु उनकी आजीविका से जुड़े थे। बैल कृषि और परिवहन में उपयोगी थे। इस प्रकार भोजन, वस्त्र, श्रम और व्यापार के लिए आवश्यक संसाधनों का प्रमुख आधार खेती तथा पशुपालन था।

चरण 4: निष्कर्ष अन्न उत्पादन और भंडारण, कपास की खेती तथा पशु-संपदा से जुड़े प्रमाण सिद्ध करते हैं कि विकसित नगरीय जीवन के पीछे कृषि और पशुपालन का सुदृढ़ आधार था।

त्वरित सुझाव: दोनों पक्षों के प्रमाण दें: खेती के लिए फसल और अन्नागार; पशुपालन के लिए पालतू पशु तथा उनका आजीविका में उपयोग लिखें।